# ATTENDANCE SHEET -CUM- MINUTES OF BOARD OF STUDIES

Minutes of the meeting of the Board of Studies of **Sanskrit & Theology** held on 17-02-2025 at 1.00 P.M. (time).

**PRESENT**

| (Name) | | (Signature) |
|---|---|---|
| 1. Dr. Anita. | (Chairperson) | ...[signature] 17/2/25 |
| 2. Prof. Shitanshu Rath | (External Expert 1) | .................. |
| 3. Prof. Sarika Varshney | (External Expert 2) | .................. |
| 4. Dr. Nishith Gaur | (Internal Member) | ...[signature] 17/2/25 |
| 5. Dr. Pooja | (Internal Member) | ...[signature] 17/2/25 |
| 6. Indu Sharma | (Internal Member) | ...[signature] 17/2/25 |

Proposed changes in the existing system

(Signature of Chairperson)

# ATTENDANCE SHEET -CUM- MINUTES OF BOARD OF STUDIES

Minutes of the meeting of the Board of Studies of **Sanskrit & Theology** held on 17-02-2025 at 1.00 P.M. (time).

PRESENT

| (Name) | | (Signature) |
|---|---|---|
| 1. Dr. Anita. | (Chairperson) | ......17/2/25 |
| 2. Prof. Shitanshu Rath | (External Expert 1) | .................. |
| 3. Prof. Sarika Varshney | (External Expert 2) | Sarika Varshney Professor Department of Sanskrit Aligarh Muslim University |
| 4. Dr. Nishith Gaur | (Internal Member) | 17/2/25 |
| 5. Dr. Pooja | (Internal Member) | 17/2/2025 |
| 6. Indu Sharma | (Internal Member) | ......17/2/25 |

Proposed changes in the existing system

# ATTENDANCE SHEET -CUM- MINUTES OF BOARD OF STUDIES

Minutes of the meeting of the Board of Studies of Sanskrit & Theology held on 17-02-2025 at 1.00 P.M. (time).

**PRESENT**

| (Name) | | (Signature) |
|---|---|---|
| 1. Dr. Anita. | (Chairperson) | 17/2/25 |
| 2. Prof. Shitanshu Rath | (External Expert 1) | ......... 17.2.25 |
| 3. Prof. Sarika Varshney | (External Expert 2) | ................. |
| 4. Dr. Nishith Gaur | (Internal Member) | 17/2/25 |
| 5. Dr. Pooja | (Internal Member) | 17/2/25 |
| 6. Indu Sharma | (Internal Member) | 17/2/25 |

Proposed changes in the existing system

(Signature of Chairperson)

**D A Y A L B A G H E D U C A T I O N A L I N S T I T U T E**
**DEPARTMENT OF SANAKRIT (FACULTY OF ARTS): 2025 - 26**

| B.A. (SEMESTER 1) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE/DOUBLE MAJOR SCHEME 8 credits each of any 2 disciplines** | | | | | |
| **संस्कृत** | | | | | |
| SM1 | STM101 | गद्य साहित्य | 3 | T | Y |
| SM1 | STM102 | संस्कृत व्याकरण | 3 | T | Y |
| SM1 | STM103 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 2 | P | Y |
| | | **Total** | **8** | | |
| | | **MAJOR-1+MAJOR-2=** | **16** | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSES(Any one Language course + SGD)** | | | | | |
| SM1 | STL101 | भाषा सम्प्रेषण- I | 2 | T | Y |
| | | SDG (Any 2 based on the Major Courses) | | | |
| SM1 | STM104 | संस्कृत लैब कोर्स -I | 1 | P | N |
| | | **Total** | 4 | | |
| **SKILL ENHANCEMENT COURSES (Any 2 related to each Dis. Sp. Major + RDC)** | | | | | |
| SM1 | STW101 | अनुप्रयुक्त संस्कृत- 1 (APPLIED SANSKRIT I) | 2 | P | N |
| SM1 | RDC151 | RURAL DEVELOPMENT | 1 | P | N |
| | | **Total: 2+1(RDC 151 compulsory)** | **3** | | |
| **COMMON VALUE-ADDED COURSES** | | | | | |
| SM1 | CEC151 | CULTURAL EDUCATION | 2 | T | N |
| SM1 | ESC151 | ENVIRONMENTAL STUDIES | 2 | T | N |
| SM1 | GKC151 | SC. METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS I | 1 | T | N |
| | | **Total Credits** | **5** | | |
| | | **Total Credits: 8+8+4+3+4+5** | **32** | | |

| B.A. (SEMESTER 2) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE /DOUBLE MAJOR SCHEME 8 credits each of any 2 disciplines** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM2 | STM201 | संस्कृत महाकाव्य | 3 | T | Y |
| SM2 | STM202 | संस्कृत गद्य साहित्य एवं अलंकार | 3 | T | Y |
| SM2 | STM203 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 2 | P | Y |
| | | **Total** | **8** | | |
| | | **MAJOR-1+MAJOR-2=** | **16** | | |
| **MUTLIDISCIPLINARY COURSES (NON-FACULTY LEVEL)** | | | | | |
| | | **Total** | **4** | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSES(Any one Language course + SGD)** | | | | | |
| SM2 | STL201 | भाषा सम्प्रेषण- 2 | 2 | T | Y |
| | | SGD (Any 2 based on the Major Courses) | | | |
| SM2 | STM204 | संस्कृत लैब कोर्स- 2 | 1 | P | N |
| | | **Total** | **4** | | |
| **SKILL ENHANCEMENT COURSES (Any 2 related to each Dis. Sp. Major + RDC 1 & 2)** | | | | | |
| SM2 | STW201 | अनुप्रयुक्त संस्कृत-2 (APPLIED SANSKRIT- II) | 2 | P | N |
| SM2 | RDC251 | AGRICULTURAL OPERATIONS | 1 | P | N |
| SM2 | RDC252 | SOCIAL SERVICE | 1 | P | N |
| | | **Total: 2+2 (RDC 251 + RDC 252compulsory)** | **4** | | |
| **COMMON VALUE-ADDED COURSES** | | | | | |
| SM2 | CAC251 | CO-CURRICULAR ACTIVITIES | 3 | P | N |
| SM2 | CRC251 | COMPARATIVE STUDY OF RELIGION | 2 | T | N |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| SM2 | GKC251 | SC.METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS II | 1 | T | N |
| | | **Total Credits** | **6** | | |
| | | **Total Credits:8+8+4+4+4+6** | **34** | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **B.A. (SEMESTER 3)** | | | | | |
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE /DOUBLE MAJOR SCHEME**<br>**12 credits each of any 2 disciplines** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM3 | STM301 | नाटक, नाट्यतत्व एवं छंदोज्ञान | 3 | T | Y |
| SM3 | STM302 | ऐतिहासिक महाकाव्य एवं व्याकरण | 3 | T | Y |
| SM3 | STM303 | गीतिकाव्य एवं व्याकरण | 3 | T | Y |
| SM3 | STM304 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 3 | P | y |
| | | **Total** | **12** | | |
| | | **MAJOR-1+MAJOR-2=** | **24** | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COURSES**SDG (Any 2 based on the Major Courses) | | | | | |
| SM3 | STM305 | संस्कृत लैब कोर्स- 3 | 1 | P | N |
| | | **Total** | **2** | | |
| **SKILL ENHANCEMENT COURSES (Any 2 related to each Dis. Sp. Major)** | | | | | |
| SM3 | STW301 | अनुप्रयुक्त संस्कृत- 3 (APPLIED SANSKRIT – III) | 2 | P | N |
| | | **Total Credits** | **2** | | |
| **COMMON VALUE-ADDED COURSES** | | | | | |
| SM3 | GKC351 | SC.METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS II | 1 | T | N |
| | | **Total Credits** | **1** | | |
| | | **Total Credits: 12+12+2+2+2+1** | **31** | | |
| **B.A. (SEMESTER 4)** | | | | | |
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE /DOUBLE MAJOR SCHEME**<br>**12 credits each of any 2 disciplines** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM4 | STM401 | वेद एवं वेदाङ्ग | 3 | T | Y |
| SM4 | STM402 | रामायण, महाभारत एवं पुराण | 3 | T | Y |
| SM4 | STM403 | व्याकरण, अनुवाद एवं रचना | 3 | T | Y |
| SM4 | STM404 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 3 | P | Y |
| | | **Total** | **12** | | |
| | | **MAJOR-1+MAJOR-2=** | **24** | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COURSES**SDG (Any 2 based on the Major Courses) | | | | | |
| SM4 | STM405 | संस्कृत लैब कोर्स- 4 | 1 | P | N |
| | | **Total** | **2** | | |
| | | | | | |
| **COMMON VALUE-ADDED COURSES** | | | | | |
| SM4 | GKC451 | SC. METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS IV | 1 | T | N |
| SM4 | CAC451 | CO-CURRICULAR ACTIVITIES | 3 | P | N |
| | | **Total Credits** | **4** | | |
| | | **Total Credits: 12+12+1+4** | **29** | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **B.A. (SEMESTER 5)** | | | | | |
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE**<br>**16 Credits for 1st Major + 8 credits for 2nd Major(Minor)** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM5 | STM501 | संस्कृत वाङ्मय में वैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ | 4 | T | Y |
| SM5 | STM502 | लौकिक संस्कृत साहित्य- गद्य एवं चम्पूकाव्य | 3 | T | Y |
| SM5 | STM503 | संस्कृत व्याकरण | 3 | T | Y |
| SM5 | STM504 | भाषाविज्ञान | 4 | T | Y |
| SM5 | STM505 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 2 | P | Y |
| | | **Total** | **16** | | |
| **Total 16 credits + 8 credits for II major =24** | | | | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COURSES**SDG (Any 1 based on the Major Course) | | | | | |
| SM5 | STM506 | सेमिनार एवं समूहचर्चा | 1 | P | N |
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE 8 credits for Minor** | | | | | |
| SM5 | STM511 | संस्कृत वाङ्मय में वैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ | 4 | T | Y |
| SM5 | STM512 | भाषाविज्ञान | 4 | T | Y |

| SKILL ENHANCEMENT COURSES | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| SM5 | SIC501 | सेमीनार इंटर्नशिप कोर्स (The student will go for internship/training at the end of 4th semester and evaluation will be done in 5thSem. | 3 | P | N |
| | | **Total Credits** | **3** | | |
| | | **Total Credits: 24+1+3** | **28** | | |

| **B.A. (SEMESTER 6)** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE16 Credits for 1st Major + 8 credits for 2nd Major** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM6 | STM601 | उपनिषद् एवं दर्शन | 4 | T | Y |
| SM6 | STM602 | **लौकिक साहित्य : महाकाव्य एवं खण्डकाव्य** | 4 | T | Y |
| SM6 | STM603 | साहित्य शास्त्र | 4 | T | Y |
| SM6 | STM604 | पालि एवं प्राकृत | 4 | T | Y |
| | | **Total- 16** | | | |
| | | **Total 16 credits + 8 credits for II major =24** | **24** | | |
| **ABILITY ENHANCEMENT COURSES**SDG (Any 1 based on the Major Course) | | | | | |
| SM5 | STM605 | SEMINAR GROUP DISCUSSION | 1 | P | N |
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE 8 credits for Minor** | | | | | |
| SM6 | STM611 | साहित्य शास्त्र | 4 | T | Y |
| SM6 | STM612 | पालि एवं प्राकृत | 4 | T | Y |
| | | **Total credits: 24+1** | **25** | | |

| **B.A. (SEMESTER 7) & MA Previous (Sem. 1st)** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **DEPARTMENTAL SPECIFIC CORE COURSE (MAJOR COURSE) DSC 20 Credits** | | | | | |
| SM7 | STM701/711 | अनुसंधान क्रियाविधि (RESEARCH METHODOLOGY) | 4.0 | T | Y |
| SM7 | STM702/712 | भारतीय संस्कृति | 4.0 | T | Y |
| SM7 | STM703/713 | काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र | 4.0 | T | Y |
| SM7 | STM704/714 | निबन्ध ,व्याकरण एवं रचना | 4.0 | T | Y |
| SM7 | STM705/715 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 4.0 | P | Y |
| | **Total- 20** | | **20.0** | | |
| **SKILL ENHANCEMENT/INTERNSHIP/DISSERTATION – 2 CREDITS** | | | | | |
| SM7 | STM 706 | SYNOPSIS (With research)/ | 2.0 | P | Y |
| SM7 | STM 707/717 | SELF STUDY (For non-research option) | 2.0 | P | Y |
| | | **Total Credits:** | **2.0** | | |
| | | **Total Credits 22** | | | |
| **B.A. -SEMESTER 8 & MA Previous (Sem. 2nd)** | | | | | |
| **DISCIPLINE SPECIFIC MAJOR COURSE** | | | | | |
| **SANSKRIT** | | | | | |
| SM8 | STM801/811 | ध्वनि सिद्धांत | 4 | T | Y |
| SM8 | STM802/812 | धर्मशस्त्र | 4 | T | Y |
| SM8 | STM803/813 | चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन (For Non-Research students) | 4 | T | Y |
| SM8 | STM 804/814 | परिसंवाद एवं संगोष्ठी | 4 | P | Y |
| | | | | | |
| **Total- 16.** | | | | | |
| | | | | | |
| **SKILL ENHANCEMENT/INTERNSHIP/DISSERTATION** | | | | | |
| SM8 | STM805 | DISSERTATION (With research)/ | 10 | P | P |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| SM8 | STM806/816 | चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन (For Non-Research students) | 5 | T | Y |
| SM8 | STM807/817 | स्वाध्यायन एवं सत्रीय निबंध (For Non-Research students) | 5 | T | Y |
| | | **Total-10** | | | |
| | | **TOTAL CREDITS- 26** | | | |

M.A. Final & Ph.D Course Work

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| STM001 | RESEARCH METHODOLOGY | 4.0 | Yes | T |
| STM002 | LAGHU SHODH VISHAYAK PURVADHYAYAN | 4.0 | No | P |
| STM901 | LAGHU SHODH PRABANDH | 12.0 | Yes | P |
| STM902 | SANSKRIT MEIN NAVEEN PRAYOG-GADYA | 4.0 | Yes | T |
| STM903 | SANSKRIT MEIN NAVEEN PRAYOG-PADYA | 4.0 | Yes | T |
| STM904 | VYAKARAN: KASHIKA EVAM SIDDHANTKAUMUDI | 4.0 | Yes | T |
| STM905 | VYAKARANSHASTRA: DARSHAN EVAM ITIHAAS | 4.0 | Yes | T |
| STM951 | LITERATURE REVIEW | 4.0 | Yes | P |
| STM953 | SELF STUDY COURSE | 4.0 | Yes | P |
| STM954 | ADV. RESEARCH METHODOLOGY& ANALYSIS | 4.0 | Yes | T |
| STM955 | BHASHA KA SANRACHNATMAK SWAROOP | 4.0 | Yes | T |

| Program Name- B.A. SANSKRIT | |
|---|---|
| Status of Course & Credit: 3rd Semester   Ability Enhancement Compulsory Course (2 credits) | |
| Course Number & Title: STL101   **भाषा संप्रेषण** | |
| Lectures/ Week: of 55 m. Each. [Week 13 per semester]: 2 per week | |
| Total Lectures / Semester: 26 | |
| 1 | **Introduction:**<br><br>संस्कृत भाषा संप्रेषण एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम है जो छात्रों को संस्कृत भाषा में प्रभावी ढंग से संप्रेषण करने के लिए तैयार करता है। यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा के व्याकरण, शब्दावली, और साहित्य के साथ-साथ संप्रेषण कौशल को भी शामिल करता है, जिससे छात्रों को संस्कृत भाषा की ज्ञान प्राप्त करने और संस्कृत साहित्य की समझ और सराहना करने में मदद मिलती है। इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य संस्कृत भाषा की आधारभूत ज्ञान प्रदान करना, संस्कृत भाषा में संप्रेषण कौशल विकसित करना, और संस्कृत साहित्य की समझ और सराहना करना हैं। यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा और साहित्य में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए उपयुक्त है। |
| 2 | **Objectives:**<br>1: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को स्वर तथा व्यंजन वर्णों का ज्ञान एवं उनके उच्चारण शुद्ध का ज्ञान कराना है ।<br><br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को भाषा संरचना के विषय में समझाना<br><br>है छात्रों को लिंग ( पुरुष , स्त्री और नपुंसक ) के विभिन्न रूप और उनके प्रयोग को समझाना है तथा लिंग के आधार पर छात्रों में शब्दों को वर्गीकृत करने की क्षमता विकसित कराना है ।<br><br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सर्वनाम के ज्ञान और उपयोग को समझाना है तथा छात्रों में सर्वनाम का सही और सम्यक् प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना है जिससे संवाद और लेखन में स्पष्टता बनी रहे ।<br><br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को शब्दों के विभिन्न रूपों और उनके उपयोग को समझाना है तथा शब्द के विभिन्न रूपों को समझाकर छात्रों में सृजनात्मक लेखन की क्षमता विकसित कराना है ।<br><br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में संस्कृत संख्याओं के माध्यम से शब्दावली में **वृद्धि** तथा संस्कृत में संख्याओं की रचना और उनके प्रयोग का ज्ञान कराना है । |
| 3 | **Course Outcomes**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों की पठन क्षमता में सुधार होगा , सही वर्णों को पहचानने से उनके लेखन कौशल में वृद्धि होगी तथा वर्णमाला का ज्ञान अन्य भाषाओं में संस्कृत के प्रभाव को समझने में छात्रों की सहायता करेगा<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों की वाक्य संरचना में दक्षता आएगी, उनके पठन और लेखन कौशल का विकास होगा तथा लिंग ज्ञान का सही प्रयोग करने से उनके संवादों में स्पष्टता आएगी । |

| | |
|---|---|
| | 3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में सर्वनाम के सही उपयोग से भाषा कौशल में वृद्धि होगी एवं सर्वनाम के विभिन्न प्रकारों को जानकर छात्रों के व्याकरणिक ज्ञान विकसित होगा ।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में भाषाई दक्षता विकसित होगी व्याकरण ज्ञान सुगठित होगा उनके लेखन और पठन कौशल में वृद्धि होगी तथा सृजनात्मक लेखन में अभिव्यक्ति विकसित होगी ।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में संस्कृत शब्दावली में वृद्धि होगी जिससे भाषा कौशल में सुधार होगा । |

| 4 | Course Contents | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | Unit – I संस्कृत वर्णमाला गुणिताक्षर एवं संयुक्ताक्षर | 6 pds | Understanding |
| | Unit - II लिंग परिचय -पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग | 5 pds | Understanding |
| | Unit - III सर्वनाम परिचय | 5 pds | Analyzing & Applying |
| | Unit – IV शब्द रूप परिचय | 5 pds | Understanding & Analyzing |
| | Unit - V संख्या परिचय (1 से 100) | 5 pds | Understanding & Applying |

| 5. | TEXT BOOKS | AUTHORS | EditionYear | Publisher |
|---|---|---|---|---|
| | रचनानुवादकौमुदी | डॉ कपिल देव द्विवेदी | 40th edition, 2024 | विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी |
| | लघुसिद्धांतकौमुदी | गोविन्द प्रसाद शर्मा | 2021 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | संस्कृत व्याकरण | बाबूराम त्रिपाठी | 2022 | श्री विनोद पुस्तक मंदिर |
| | बाबूराम सक्सेना | संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका | 2021 | राम नारायणलाल प्रहलाद दास |

**Course Number: STW101, Course Title:** अनुप्रयुक्त संस्कृत **(APPLIED SANSKRIT I)**

Class: B.A., Status of Course: SKILL ENHANCEMENT COURSES, Approved since session: 2016-17

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 4 (L-0+T-0+P/S-4), Min. pds./sem: 52

यूनिट 1: संस्कृत व्यवहारिक शब्द

यूनिट 2: वाक्य रचना - वाक्य स्वरूप, प्रकार एवं वाक्य विश्लेषण

यूनिट 3: स्वर व्यञ्जन के उच्चारण स्थान एवं विकारों का प्रयोग

यूनिट 4: प्रश्नवाचक सप्तककार : कुतः , किमर्थम् , कः , कति , कदा , कुत्र

यूनिट 5: आत्मनेपदी प्रयोग, समस्त पदों एवं संख्यायों का प्रयोग

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

संस्कृत शिक्षण सारणी - आचार्य रामशास्त्री, मयंक प्रकाशन, नई दिल्ली

अनुवाद रत्नाकर - डॉ रमाकान्त त्रिपाठी, चौ. विद्याभवन वाराणसी 1973

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A. | | | |
| Status of Course & Credit: Major Course FIRST SEMSTER (3 credits) | | | |
| Course Number & Title: STM 101, गद्य साहित्य | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 per week | | | |
| Total Lectures / Semester: 39/ semester | | | |
| 1 | **Introduction:**<br>प्रस्तावना:<br>शुकनासोपदेश बाणभट द्वारा रचित कादंबरी का एक अंश है।इस में दो पात्र हैं, प्रथम-उपदेश देनेवाला और दूसरा उपदेश सुनने वाला उपदेशकर्ता शुकनास है। कादंबरी का यह संपूर्ण भाग नैतिकता एवं आचारनिष्ठा से पूर्ण है।छात्रों के द्वारा इस पाठ का अध्ययन एवं श्रवण की निः संदेह इनके लिए प्रभावशाली रहेगा। मंत्री शुकनास ने सामाजिक विषयों का सहजता से वर्णन कर मनुष्यों को परिस्थितियों का दास नहीं अपितु उनके स्वामी बन कर्मपथ पर चलने का उपदेश दिया है, जो अध्ययनकर्ता के मनोबल को बढ़ाने वाला और समाज कि वास्तविक परिस्थितियों से परिचय करने वाला होगा। | | |
| | **Objectives:**<br>1: नैतिकता एवं धर्म का पालन<br>2: मानवजीवन के व्यावहारिक जीवन का ज्ञान<br>3: गद्यसाहित्य की परंपरा का ज्ञान<br>4: धर्म और नीति का वास्तविक ज्ञान<br>5: संस्कृत की गद्य एवं पद्य विधाओं का ज्ञान | | |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1: राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्यों का ज्ञान<br>2: सर्वकालिक और सार्वभौमिक महत्व का ज्ञान<br>3: गद्यसाहित्य की परंपरा का ज्ञान<br>4: समाज के प्रति सचेत दृष्टिकोण<br>5: संस्कृत साहित्य में काव्य के भेद का ज्ञान | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit - I बाण- कादम्बरी- शुकनासोपदश | 8Pds | Understanding, Analyzing |
| | Unit - II पंचतन्त्र - मित्र- सम्प्राप्ति | 8Pds | Understanding, Analyzing |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | Unit - III गद्य साहित्य पर आलोचनात्मक प्रश्न | | 7Pds | Remembering |
| | Unit - IV इच्छाराम द्विवेदी एकादशी निम्न कथायें-<br>(१) पश्चातापः (२) अयंमभो! भवन्तकीदृशा? (३) एकादशी | | 8Pds | Understanding |
| | Unit - V कथासाहित्य पर आलोचनात्मक प्रश्न | | 8Pds | Analyzing |
| 5 | TEXTBOOK | AUTHOR EDITION PUBLISHER | YEAR | PLACE |
| | संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्भव एवं विकास<br><br>संस्कृत साहित्य का इतिहास<br><br>संस्कृत साहित्य का इतिहास | डॉ. प्रभाकरनारायण<br><br>बलदेवउपाध्याय<br><br>वाचस्पतिगैरोला | 2011<br><br>2020<br><br>2018 | चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी-१<br><br>जेनेरिक प्रकाशक, दिल्ली<br><br>चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस वाराणसी-१ |

<table>
<tr><td colspan="5">Program name - B. A. SANSKRIT</td></tr>
<tr><td colspan="5">Status of course and Credit- Ist SEMESTER (3 CREDITS)</td></tr>
<tr><td colspan="5">Course Number and Title-STM102, संस्कृत व्याकरण</td></tr>
<tr><td colspan="5">Lecture/week of 55 mts. Each [week 13per semester]:3per week</td></tr>
<tr><td colspan="5">Total Lecture/Semester-39</td></tr>
<tr><td>1</td><td colspan="4">Introduction: प्रस्तुत पाठ्यक्रम संस्कृत व्याकरण, व्याकरणिक नियमों का अध्ययन है जो विशेष रूप से सभी शब्दों, क्रियाओं, संज्ञा पदों, प्रत्येक वाक्य को, समास, प्रत्येक वर्ण 2 को जो विशेष प्रकार से सम्पूर्णता प्रदान करता है। शब्दों को व्युत्पन्न करने का शास्त्र है।</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="4">2. Objectives:<br><br>1 छात्र संजा पदों एवं संख्या से परिचित होगें।<br>2 छात्रों को वाच्य परिवर्तन के नियमों का बोध कराना है।<br>3 छात्रों को धातुरूप के नियमों का ब्रोध कराना है।<br>4 छात्रों को स्वर सन्धि के नियमों का ज्ञान होगा।<br>5 छात्रों को व्यंजन सन्धि के नियमों का जान होगा।</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="4">3. Course Outcomes:<br>1.छात्रों को संज्ञा प्रकरण एवं संख्या का जान प्राप्त होगा।<br>2.छात्र वाच्य परिवर्तन के नियमों को जानेगें।<br>3.छात्र धातुरूप के माध्यम से गण, वचन, लकार आदि का जान करेंगे।<br>4.छात्र सन्धि के नियमों को जानेगे।<br>5.छात्र व्याकरणिक नियमों को जानेगें।</td></tr>
<tr><td>4</td><td colspan="2">Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit)</td><td>Period Number of Lecture(s)</td><td>Bloom's Taxonomy Learning outcome</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">Unit -1 a) संज्ञा प्रकरण संख्या रूप एक से सौ तक</td><td>8</td><td>Understanding</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2"></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">Unit -2 वाच्य परिवर्तन</td><td>7</td><td>Understanding</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">Unit-3 धातु रूप- परस्मैपद आत्मनेपद</td><td>7</td><td>Understanding</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">Unit -4 स्वर सन्धि</td><td>8</td><td>Understanding & applying</td></tr>
<tr><td></td><td colspan="2">Unit-5 व्यंजन सन्धि</td><td>8</td><td>Understanding & applying</td></tr>
<tr><td>5</td><td>TEXTBOOK</td><td>AUTHOR EDITION PUBLISHER</td><td>YEAR</td><td>PLACE</td></tr>
</table>

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 1. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका<br><br>2. संस्कृत व्याकरण<br><br>3. संस्कृत व्याकरण<br><br>4. संस्कृत साहित्य का इतिहास<br><br>5. संस्कृत साहित्य का इतिहास | बाबूराम सक्सेना<br><br>बाबूराम त्रिपाठी<br><br>कपिल देव द्विवेदी<br><br>गैरोला वाचस्पति<br><br>बलदेव उपाध्याय | 2015<br><br>2011<br><br>2017<br><br>2015<br><br>2019 | |

**Course Number: STM103, Course Title:** परिसंवाद एवं संगोष्ठी **(PARISAMVAD EVAM SANGOSHTHI)**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 4 (L-0+T-0+P/S-4), Min. pds./sem: 52

It comprises topics of STM101 and STM102 courses for Seminar and Group Discussion.

**Course Number: STM104, Course Title:** SANSKRIT LAB COURSE -I

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2022-23

Total Credits: 1, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-0+T-0+P/S-2), Min.pds./sem: 26

**Course Number: CEC151, Course Title: CULTURAL EDUCATION**

Class: B.A., Status of Course: CORE COURSE, Approved since session: 2001-02

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-2+T-0+P/S-0), Min.pds./sem: 39

UNIT 1: INDIA AND INDIAN CULTURE

(a) Geographical background and Indian people, (b) Culture and Civilization: Meaning and significance, (c) Characteristic features of Indian culture, (d) Unity in Diversity.

UNIT 2: CULTURAL BACKGROUND OF THE SOCIAL ORGANISATION

(a) Marriage and family institutions

(b) Varnashram System, Caste System and their modern form.

(c) Education system and Institutions.

UNIT 3: LANGUAGE AND LITERATURE

(a) Sanskrit and Literature

(b) Pali, Prakrit, Apabhransha, Regional Languages and Literature (introduction only)

(c) Scientific Traditions- Ayurvigyan, Mathematics astronomy.

UNIT 4: INDIAN CREATIVE TRADITIONS-INTRODUCTION

(a) Performing Arts- Music and dance

(b) Visual Arts- Painting, Sculpture and Architecture
(c) Scientific Traditions- Ayurvigyan, Mathematics astronomy.
UNIT 5: INDIA AND THE WORLD
Indian cultural contribution to the world.

SUGGESTED READINGS:

AL Basham: THE WONDER THAT WAS INDIA Stella Kamrich: INDIAN SCULPTURE
AK Coomaraswamy: ARTS AND CRAFTS OF INDIA
Sunit Kumar Chatterjee: LANGUAGES AND LITERATURE OF MODERN INDIA Bishan Swarup: THEORY OF INDIAN MUSIC
Edward Conze: BUDDHIST SCRIPTURES
Rajkishore Singh: BHARTIYA KALA AUR SANSKRITI
Rawlinssion: CULTURAL HISTORY OF INDIA
BN Lunia: PRACHIN BHARTIYA SANSKRITI
Baldeo Upadhyaya: SANSKRIT SHASTRON KA ITIHAS

**Course No.: ESC151, Course Title: ENVIRONMENTAL STUDIES**

Class: BA/BCom/BSc/BTech/BBM/BEd, Status of Course: CORE COURSE, Approved since session: 2018-19
Total Credits:2, Periods (55 mts. each)/week:2(L-2+T-0+P/S-0), Min.pds./sem.:26
UNIT 1: INTRODUCTION TO NATURAL RESOURCES
Introduction to natural resources (soil, water, air, flora and fauna).
UNIT 2: ECOSYSTEMS
Structure and function of an ecosystem. Different types of ecosystems (Forest, Grassland, Desert, Aquatic etc.), Ecological succession, Food chain, Food Webs, Ecological pyramids.
UNIT 3: BIODIVERSITY AND ITS CONSERVATION
Value of biodiversity. India as a mega-biodiversity Nation. Threats to biodiversity. Methods of conservation of biodiversity.
UNIT 4: DEGRADATION OF NATURAL RESOURCES
Overexploitation, soil, water and air pollution, waste generation. Remediation and management of degraded soil.
UNIT 5: ENVIRONMENT AND SOCIAL ISSUES
Environmental ethics. Human population and Environment and Human healthStatus report on environmental issues related to natural resource management and socio-economic conditions.

SUGGESTED READINGS:

Bharucha Erach, The Biodiversity of India, Mapin Publishing Pvt. Ltd., Ahmedabad - 380013, India
Heywood, V. H & Watson, R. T. 1995. Global Biodiversity Assessment. Cambridge Univ. Press 1140p.

Jadhav, H & Bhosale, V. M. 1995. Environmental Science Protection and Laws. Himalaya Pub. House, Delhi 284 p.
Odum, E. P. 1971. Fundamentals of Ecology. W. B. Saunders Co. USA, 574p
Townsend C., Harper J, and Michael Begon, Essentials of Ecology, Blackwell Science
Wanger K. D., 1998 Environmental Management. W. B. Saunders Co. Philadelphia, USA 499 p.

**Course Number GKC151, Title: SC. METH., G.K. & CURRENT AFFAIRS**

Class: B.A., Status of Course: CORE COURSE, Approved since Session: 2014-15

Total Credits: 1, Periods (55 mts. each)/week:1 (L-1+T-0+P/S-0), Min.pds./sem.:13

UNIT 1: GEOGRAPHY INDIA

Location, Physical Features, Major mountains, rivers, ocean, demographic background, States and Union Territories, population, literacy and other facts, Dams and rivers, Important towns and the rivers on which they are located, National Parks and Wild Life Sanctuaries, Railways, Civil aviation, Major ports, Crops and minerals.

UNIT 2: GEOGRAPHY WORLD

Our Solar System (Sun and nine planets), Earth- rotation (or the daily rotion), revolution (the annual motion), latitudes and longitudes, Continents, Oceans, Seas, Peaks, Major rivers, Famous Waterfalls, Major countries of the world and their Capitals, Languages, Religions & Location, Major crops, Mineral wealth and their producer countries.

UNIT 3: HISTORY-INDIA

Important dates of Indian History from Indus Valley Civilization to present day, History of Indian Independence, Historically important Places, Important dates and days.

UNIT 4: HISTORY-WORLD

Main civilization of ancient times, World Wars-their causes. Important events and dates in World History. Ancient Monuments, Important Places.

UNIT 5: ENVIRONMENTAL STUDIES-NATURAL RESOURCES

(a) Multidisciplinary Nature of Environmental Studies- Definition, Scope and Importance, Need for Public Awareness (b) Natural Resources- Forest, Water, Mineral, Food, Energy, Land, Animal Products, Role of Individual in Conservation of Natural Resources, Equitible use of Resources for Sustainable Life Style.

SUGGESTED READING:

NCERT: TEXT BOOKS ON HISTORY, GEOGRAPHY, CIVICS
MANORAMA YEAR BOOK
MR Agarwal: GENERAL KNOWLEDGE DIGEST
NEWS PAPAERS AND MAGAZINES: HINDI & ENGLISH DAILY NEWS PAPERS-INDIA TODAY
COMPETITION MASTER, SPORTS STAR
COMPETITION SUCCESS REVIEWS

**Course Number: RDC131/151/161/191, Course Title: RURAL DEVELOPMENT**

Class: B.A., Status of Course: Major Course, Approved since session: 2018-19

Total Credits: 1, Periods (55 mts. each)/week: 2 (L:1+T:0+P:1+S:0), Min.pds./sem: 26

UNIT 1: Rural development: concept and its importance

UNIT 2: Understanding Rural Society, its structure and problems.

UNIT 3: Organizational structure for rural development- formal and informal including leadership, Technological interventions

UNIT 4: Green Revolution: Evaluation and its impact.

UNIT 5: Brief description of Rural Development Programme.

PRACTICALS

I. Developing questionnaire & schedule

II. Socio- Economic Survey of a village.

III. Study of a Block/ Training centre/ Agricultural Farm / Dairy Farm.

IV. Study of a Rural Development Programme

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A., B.A.Social Sci., B.Sc.(2nd semester) | | | |
| Status of Course & Credit: ABILITY ENHANCEMENT COPPULSORY COURSE (2 Credit) | | | |
| Course No. & Title- STL-201, भाषा सम्प्रेषण | | | |
| Lectures/Week: 55 mts each/ week:2, Min.pds./sem:26 | | | |
| 1. | **प्रस्तावना:**<br>यह पाठ्यक्रम संस्कृत भाषा और इसके संचार माध्यमों के अध्ययन के प्रति अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पक्षों से परिचित कराना है, ताकि वे भाषा को संचार के माध्यम के रूप में समझ सकें और इसका प्रयोग कर सकें। पाठ्यक्रम भाषा की संरचना, व्याकरण, और उच्चारण पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे भाषा का सही रूप से प्रयोग करने की क्षमता विकसित हो सके। यह कोर्स संस्कृत भाषा को जीवंत और उपयोगी बनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों को एक सशक्त संचारक के रूप में विकसित करने का प्रयास करता है। | | |
| 2. | **उद्देश्य:**<br>1. भाषा की संरचना, शब्दावली और व्याकरण का अध्ययन।<br>2. विद्यार्थियों को संस्कृत में संवाद और लेखन कौशल विकसित करना।<br>3. संस्कृत के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को विश्व में प्रचारित करना।<br>4. रेडियो, टीवी, सोशल मीडिया जैसे माध्यमों में संस्कृत का व्यावहारिक उपयोग बढ़ावा देना।<br>**5.** संस्कृत के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता को बल देना और समाज में भाषा की महत्ता को समझाना। | | |
| 3. | **परिणाम (Course Outcomes):**<br>1. विद्यार्थी संस्कृत भाषा के व्याकरण, शब्दावली और संरचना में प्रवीणता प्राप्त करेंगे, जिससे भाषा का सही और प्रभावी प्रयोग कर सकें।<br>2. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य, वैदिक ग्रंथों, और शास्त्रीय कृतियों का गहन अध्ययन कर भारतीय संस्कृति और परंपराओं की गहरी समझ विकसित करेंगे।<br>3. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य और ग्रंथों में अनुसंधान और आलोचनात्मक विश्लेषण की क्षमता विकसित करेंगे।<br>4. विद्यार्थी संस्कृत के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने की दिशा में कार्य करेंगे, साथ ही वैश्विक मंचों पर भी भाषा की उपयोगिता को समझेंगे।<br>**5.** विद्यार्थी रेडियो, टेलीविजन, और डिजिटल माध्यमों में संस्कृत भाषा के प्रयोग के तरीकों को समझकर, इन माध्यमों में भाषा का प्रभावी रूप से उपयोग करने में सक्षम होंगे। | | |
| 4. | **Course Content** | **Period no. of Lectures** | **Bloom's Taxonomy Learning Outcomes** |
| | | | |
| | Unit-1 कारक एवं विभक्ति परिचय- प्रथमा से चतुर्थी पर्यन्त | 6 pds | |
| | Unit-2 कारक एवं विभक्ति परिचय- पंचमी से सप्तमी पर्यन्त | 5pds | |
| | Unit-3 क्रियापद - परिचय | 5pds | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | Unit 4 विशेषण- सामान्य परिचय | 5pds | |
| | Unit- 5 संस्कृत संवाद एवं वाक्य प्रयोग | 5pds | |
| 5. | Text books<br>1. bookbox.com-U Tube<br>2. महर्षि दयानन्द सरस्वती संस्कृत वाक्य प्रबोध, दिल्ली संस्कृत अकादमी झण्डेवाला<br>3. Learn the easy way Sanskrit.in- https://www.google.com.in<br>4. बाबूराम त्रिपाठी-संस्कृत व्याकरण<br>5. बाबूराम सक्सेना-संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका<br>6. रचनानुवादकौमुदी, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी | | |

**Course Number: STW201, Course Title: अनुप्रयुक्त संस्कृत (APPLIED SANSKRIT II)**

Class: B.A., Status of Course: SKILL ENHANCEMENT, Approved since session: 2016-17

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 4 (L-0+T-0+P/S-4), Min.pds./sem: 52

सम्भाषण तथा संगणक प्रयोग

यूनिट 1: सम्भाषण के सोपान

यूनिट 2: सम्भाषण - संस्कृत से अंग्रेजी

यूनिट 3: सम्भाषण - अंग्रेजी से संस्कृत

यूनिट 4: कम्प्यूटर - परिचय (हार्डवेयर से सम्बंधित)

यूनिट 5: कम्प्यूटर का प्रयोग - माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइंट, एक्सेल, इंटरनेट इत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

Anuradha Paudarwal- Geeta Path-U Tube

Madan Mohan Jha- Sanskrit apps- google sites

शंकर सिंह - कम्प्यूटर और सूचना तकनीक, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली

P.S.G. Kumar-Information Technology Basics

C.S. Changetiya-Basic Computer Course https://in.indiamart.com

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | | | |
| Status of Course & Credit: 5th SEMESTER (3 CREDITS) | | | |
| Course Number & Title: STM 201 संस्कृत महाकाव्य | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 PER WEEK | | | |
| Total Lectures / Semester: 39 | | | |
| 1 | **Introduction:** प्रस्तुत पाठ्यक्रम में महाकाव्य के लक्षणों और उस पर आधारित ग्रन्थों से परिचित कराया जायेगा। संस्कृत व्याकरण जो शब्दों को व्युत्पन्न करने का शास्त्र है इसके नियमों से अवगत कराया जायेगा। संस्कृत भाषा के समोन्मिलित ज्ञान के लिए महाकाव्य एवं व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है। | | |
| 2 | Objectives: (At least 5)<br>1. छात्रों को महाकाव्य के लक्षणों एवं कथावस्तु का परिचय कराना।<br>2. महाकवि कालिदास के संदर्भ विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन कराना।<br>3. कुमारसम्भवम् महाकाव्य का समग्र परिचय।<br>4. महाकवि माघ के विषय में विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन।<br>5. शिशुपालवधम् एवं उसके माध्यम से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। | | |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>**1.** छात्र महाकाव्य के लक्षण ग्रन्थों में घटित होते समझ सकेंगे।<br>2. महाकाव्यों की कथावस्तु से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>3. संस्कृत महाकाव्यों के इतिहास का ज्ञान कर सकेंगे।<br>4. संस्कृत अनुवाद का ज्ञान कर सकेंगे।<br>5. कारक के सूत्रों एवं नियमों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | यूनिट 1: संस्कृत महाकाव्य: एतिहासिक प्रष्ठभूमि | 8 | Understanding |
| | | | |
| | यूनिट 2: महाकवि कालिदास | 8 | Understanding and applying |
| | • | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | यूनिट 3: कुमारसम्भवम् (पंचमसर्ग) | | | 7 | Understanding and applying |
| | • | | | | |
| | यूनिट 4: महाकवि माघ | | | 8 | Understanding and applying |
| | • | | | | |
| | यूनिट 5: शिशुपालवधम् (प्रथमसर्ग) | | | 8 | Understanding and applying |
| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE | |
| | कालिदास कुमारसम्भवम् | डॉ. कृष्ण मणि त्रिपाठी | 2006 | चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी | |
| | शिशुपालवधम् प्रथम् सर्ग | तारिणीश झा | 2019 | रामनारायण लाल अरुणकुमार | |
| | कालिदास एक अनुशीलन | देवदत्त शास्त्री | 1991 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी | |
| | संस्कृत साहित्य का इतिहास | बलदेव उपाध्याय | 2017 | शारदा मन्दिर प्रकाशन | |
| | संस्कृत व्याकरण | बाबूराम त्रिपाठी | 2002 | श्री विनोद पुस्तक मन्दिर | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | | | |
| Status of Course & Credit: 5th SEMESTER (3 CREDITS) | | | |
| Course Number & Title: STM 202, संस्कृत गद्य साहित्य एवं अलंकार | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK | | | |
| Total Lectures / Semester: 52 | | | |
| 1 | **Introduction:**<br>प्रस्तुत पाठ्यक्रम में आधुनिक काव्यशास्त्रीय नियमों पर आधारित काव्य, नाटक आदि विधाओं का परिचय कराया जायेगा। संस्कृत भाषा के समोन्मिलित ज्ञान के लिए संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है। अतः विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के लिए आधुनिक संस्कृत साहित्य का अध्ययन पाठ्यक्रम में रखा गया है। | | |
| 2 | Objectives:<br>1. संस्कृत साहित्य का परिचय, इतिहास, वैशिष्ट्य एवं विकास क्रम का ज्ञान कराना।<br>2. संस्कृत साहित्य के प्रतिनिधि ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का परिचय कराना।<br>3. प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृत वाङ्मय का स्वरूप, सम्बन्ध एवं उनके समीक्षात्मक अध्ययन का ज्ञान कराना।<br>4. आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख कृतियों का साङ्गोपाङ्ग अनुशीलन कराना।<br>5. आधुनिक संस्कृत साहित्य में विवेचित 'शिवराजविजयम्' एवं 'वधूदहनम्' कृतियों के विषय में ज्ञान कराना।<br>6. संस्कृत साहित्य में सन्दर्भित प्रमुख अलंकारों का सोदाहरण अध्ययन कराना। | | |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का परिचय, वैशिष्ट्य, इतिहास एवं विकास क्रम को समझ सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के प्रतिनिधि ग्रन्थों- ग्रन्थकारों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।<br>3. विद्यार्थी प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य का स्वरूप, सम्बन्ध एवं उनका समीक्षात्मक अध्ययन प्राप्त कर सकेंगे।<br>4. आधुनिक संस्कृत साहित्य में अन्तर्निहित 'शिवराजविजयम्','चक्रव्यूहम्' एवं 'वधूदहनम्' कृतियों के द्वारा काव्य, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं को विधिवत् समझ सकेंगे।<br>5. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त प्रमुख अलंकारों का सोदाहरण परिचय, उद्देश्य, महत्व एवं उनका शास्त्रीय प्रयोग समझ सकेंगे। | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | यूनिट 1: अम्बिकादत्त व्यास एवं संस्कृत साहित्य में उनका स्थान | 10 | Understanding |
| | यूनिट 2: शिवराजविजयम् (प्रथम विराम का प्रथम नि:श्वास) | 10 | Understanding and applying |
| | यूनिट 3: त्रिपथगा (प्रो.हरिदत्त शर्मा) से एक नाटक - 'वधूदहनम्' | 11 | Understanding |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | | and applying |
| | यूनिट4: अलंकार-साहित्य का परिचय एवं शब्दालंकार (परिभाषा एवं उदाहरण) - अनुप्रास, यमक एवं श्लेष | | 11 | Understanding and applying |
| | यूनिट 5: अर्थालंकार (परिभाषा एवं उदाहरण) उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, विरोधाभास, निदर्शना, विभावना, समासोक्ति, विशेषोक्ति तथा शंकर | | 10 | Understanding and applying |
| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE |
| | संस्कृत शिक्षण सरणी | आचार्य राम शास्त्री | 2023 | परिमल पब्लिकेशन,दिल्ली |
| | शिवराजविजयम् | प्रो. (डा.) जय सिंह | 2023 | प्रकाशन मन्दिर, बैजनाथ, वाराणसी |
| | आधुनिक संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास | राधावल्लभ त्रिपाठी | 2023 | न्यू भारतीय बुक कोपरेशन दिल्ली |
| | त्रिपथगा | हरिदत्त शर्मा | 2016 | आञ्जनेय प्रकाशन इलाहाबाद |

**Course Number: STM203, Course Title:** परिसंवाद एवं संगोष्ठी

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 4 (L-0+T-0+P/S-4), Min.pds./sem: 52

It comprises topics of STM201 and STM202 courses for Seminar and Group Discussion.

**Course Number: STM204, Course Title:** SANSKRIT LAB COURSE- II

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2016-17

Total Credits: 1, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-0+T-1+P/S-0), Min.pds./sem: 26

संस्कृत व्याकरण के माध्यम से संस्कृत शब्दावली, सूक्ति, लोकोक्ति आदि का व्यवहारिक प्रयोग।

सन्दर्भ:

Madan Mohan Jha- Sanskrit apps- google sites

**Course No.: GKC251, Title: SC. METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS II**

Class: BBA/BSSc/BA/BCom/BSc/BSc Engg., Status: Core Course, Approved since session: 2004-05 Total Credits: 1, Periods(55 mts. each)/week:1(L-1+ T -O+P/S-O), Min.pds./sem. :13

UNIT 1: POLITICAL SCIENCE-INDIA

Constitution-preamble, citizenship, fundamental, rights, Distribution of powers, General elections, Mode of amendments, Some important amendments, President, Prime Minister and their tenure, salary, powers etc., Defence Forces and Awards.

UNIT 2: POLITICAL SCIENCE

INDIA-Important Indian Political Parties and their symbols, Important Indian Newspapers.

WORLD-United Nations Organisation - its main organs, specialised agencies of UNO, major blocks, treaties, alliances, conferences and associations.

UINT 3: ECONOMICS-INDIA

Some basic economic facts, Five Year Plans, Industrial developments, Principal industries, Industrial Financial Institutions.

UNIT 4: ECONOMICS-WORLD

Important internationals monetary organisations, Currencies of different countries, Glossary of economic terms.

UNIT 5: ENVIRONMENTAL STUDIES-ECO SYSTEM & BIODIVERSITY

(a) Ecosystem - Concept, Structure and Function, Energy Flow in the Ecosystem, Food Chain, Forest Ecosystem, Grassland Ecosystem, Desert Ecosystem, Aquatic Ecosystem (b) Biodiversity and its Conservation - Introduction, genetic species and Ecosystem Diversity, Value of Bio-diversity, India as a Mega-Diversity Nation, Hot-spots of Biodiversity, Threats to Biodiversity, Endangered and Endemic Species in India, Conservation of Biodiversity.

SUGGESTED READING:

NCERT: TEXT BOOKS ON HISTORY, GEOGRAPHY, CIVICS

MANORAMA YEAR BOOK

MR Agarwal: GENERAL KNOWLEDGE DIGEST

NEWS PAPAERS AND MAGAZINES: HINDI & ENGLISH DAILY NEWS PAPERS INDIA TODAY

COMPETITION MASTER, SPORTS STAR, COMPETITION SUCCESS REVIEWS, YOJNA

**Course Number: CRC251, Course Title: COMPARATIVE STUDY OF RELIGION**

Status of Course: CORE COURSE, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-2+T-0+P/S-0), Min.pds./sem: 26

UNIT 1: (a) Meaning of the word ‘Dharam’ and ‘Religion’. (b) History of Religion-Scienctific Perspective. (c) Religion, Ethics and Values.

UNIT 2: (a) Pre-Vedic Religion. (b) Concept of Vedic Dieties and Relevance of Yajna. (c) Philosophy of Upanishad. (d) Bhagwadgita in perspective of scientific age. (e) Hinduism-Shaiva, Vaishnav and Shakta (Modern Trends).

UNIT 3: (a) Bhartiya Darshan (Yoga). (b) Jainism-(Modern Trends and Scienctific Perspectives), (c) Buddhism-(Modern Trends and Scienctific Perspectives).

UNIT 4: (a) Zoroastrianism (b) Judaism (c) Christianity-(Modern Trends and Scienctific Perspectives). (d) Islam and Sufism-(Modern Trends and Scienctific Perspectives).

UNIT 5: (a) Meaning of the word ‘Sant’ and Contribution of Sant Kabir and Guru Nanak and Tulsi Sahab in Saint tradition. (b) Radhasoami Faith and its Scientific Relevance. (c) (i) Religion and Modern Scientific age. (ii) Religion and future of Mankind.

SUGGESTED READINGS:

LM Joshi & Harbans Singh: AN INTRODUCTION TO INDIAN RELIGIONS

BS Mishra: DISCOURSES ON RADHASOAMI FAITH

Bhagwandas: ESSENTIAL UNITY OF ALL RELIGION

Bhagwandas: SAB DHARAMON KI BUNIADI EKTA

Parashuram Chaturvedi: UTTARI BHARAT KI SANT PARAMPARA
Prabha Sharma: DHARAM-SWAROOP EVEM SANDHARBH
Dayalbagh Educational Institute (DEI): VISHWA KE VIVIDH DHARAM
Ravindranath Tagore: RELIGION OF MAN
GR Singh: & CW Devis: VISHWA KE PRAMUKH DHARAM
KN Tiwari: COMPARATIVE RELIGION
VP Singh: DHARAM EVAM SANSKRITI

**Course Number: RDC251, Course Title: AGRICULTURAL OPERATIONS**

Class: B.A., Status of Course: CORE Course, Approved since session: 2000-01
Total Credits: 1, Periods (55 mts. each)/week: 2(L:1+T:0+P:1+S:0), Min.pds./sem: 26

UNIT 1

Concept of Agriculture- importance, problems of modern agriculture, classification of crops, Agriculture at a glance

UNIT 2

Land management and seed sowing- Field preparation (hoeing, harrowing, planking) nursery raising soil treatment, Seed types, seed rate, spacing, seed treatment method of sowing

UNIT 3

Nutritional management- Essential elements, their role, deficiency symptoms and classification, difference between organic manure and chemical fertilizers, types, green manures vermin compost, bio fertilizers, modes of manurial application.

UNIT 4

Intercultural operations-(i) Water management- Irrigation importance, critical stages methods of irrigation.

(ii) Crop protection- Importance diseases (casual organism and symptoms), insect and non-insect pests and prominent weeds causing damage to important crops, preventive and curative measures.

UNIT 5

Harvesting and post harvest management- Harvesting, threshing, winnowing, grain drying and storage of the produce.

PRACTICAL

1. Acquaintance with layout of an ideal agricultural farm through field visit
2. Identification of important crop seeds, manures fertilizers, diseases, insect pests and weeds
3. Understanding of the plant protection measures
4. Actual in-field participation in various farm activities viz., field preparation, sowing, intercultural activities (weeding, earthing, rouging, watering, manorial application), spraying and dusting of plant protection chemicals, harvesting, bundling threshing winnowing

**Course Number: RDC252, Course Title: SOCIAL SERVICE**

Class: B.A., Status of course: CORE COURSE, Approved since Session: 2015-16
Total Credits: 1, Periods: 55 min. each (L-0+T-0+P/S-1), Min.Pds./Sem.:13

To familiarize and participate in cleaning, field preparation, seeding, weeding, harvesting and threshing activities related to Agricultural Operations.

To sensitize students regarding keeping their surroundings clean by practically carrying the activity in campus and around D.E.I. (Deemed University) and work for all round development of society.

**Course Number: CAC251, Course Title: CO-CURRICULAR ACTIVITIES**

Class: B.A., Status of course: CORE COURSE, Approved since Session: 2015-16

Total Credits: 3, Periods: 55 min. each (L-0+T-0+P/S-1), Min.Pds./Sem.:13

To encourage students in cultural activities viz. Dramatics & Music Competition, Games & Sports and literary activities viz. Hindi & English Essays, Hindi & English Debate Competition to have overall development of the student.

**Course Number: STW301, Course Title: अनुप्रयुक्त संस्कृत (APPLIED SANSKRIT III)**

Class: B.A., Status of Course: SKILL ENHANCEMENT, Approved since session: 2016-17

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 3 (L-0+T-0+P/S-3), Min.pds./sem: 39

संगणक एवं सम्भाषण

यूनिट 1: कम्प्यूटर - परिचय

यूनिट 2: सम्भाषण के सोपान

यूनिट 3: सम्भाषण - संस्कृत से हिन्दी

यूनिट 4: सम्भाषण - हिन्दी से संस्कृत

यूनिट 5: माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइंट, एक्सेल प्रयोग इत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

शंकर सिंह - कम्प्यूटर और सूचना तकनीक, पूर्वांचल प्रकाशन, दिल्ली

P.S.G. Kumar-Information Technology Basics

C.S. Changetiya-Basic Computer Course https://in.indiamart.com

संस्कृत शिक्षण सरणी - आचार्यराम शास्त्री- मयंक प्रकाशन, नई दिल्ली

अनुवाद रत्नाकर- डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी- चौ. विद्या भवन वाराणसी- १९७३

संस्कृत व्यवहार साहस्त्री- संस्कृत भारती, दिल्ली

भाषण सोपानम्- जनार्दन हेगडे- संस्कृत भारती, बेङ्लूरू

| | |
|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | |
| Status of Course & Credit: 3rd Semester Major Course (4 credits ) | |
| Course Number & Title: STM 301, नाटक, नाट्यतत्त्व एवं छंदोज्ञान | |
| Lectures/ Week: of 55 m. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week | |
| | |
| Total Lectures: 52, Semester: 3 | |
| 1 | **Introduction:**<br>नाटक एक सृजनात्मक कला है, जिसमें कथा, संवाद, और प्रदर्शन का माध्यम उपयोग किया जाता है। यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज की समस्याओं और मनुष्य की भावनाओं का प्रतिबिंब भी प्रस्तुत करता है। नाट्यतत्त्व नाटक की मूलभूत विशेषताओं और संरचना को संदर्भित करता है। इसमें पात्रों, संवादों, मंच सज्जा, और संगीत का समावेश होता है। नाट्यतत्त्व नाटक के प्रभावी प्रदर्शन के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि ये दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने में मदद करते हैं।छंद, भारतीय नाटकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये विशेष प्रकार की कविता हैं, जो नाटक के संवादों में लय और संगीत प्रदान करते हैं। छंद का सही उपयोग नाटक को और भी आकर्षक और रसपूर्ण बनाता है।इस प्रकार, नाटक, नाट्यतत्त्व और छंदों का सम्मिलित अध्ययन नाट्य कला को समझने में मदद करता है और इसे एक सम्पूर्ण और समृद्ध अनुभव बनाता है। |
| 2 | **Objectives: (At least 5)**<br>1: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को कालिदास के जीवन, कार्य और साहित्यिक योगदान के बारे में जानकारी देना है।<br>2: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य के महत्व और इसके विकास में अभिज्ञानशाकुन्तलम् के स्थान का ज्ञान कराना और पात्रों के बीच महत्वपूर्ण संवाद, जिसमें प्रेम, समर्पण, और मानवीय संबंधों का गहराई से विश्लेषण कराना है।<br>3: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मुख्य घटनाक्रमों का विस्तार से अध्ययन करना और पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति और उनके विकास पर चर्चा करना है।<br>4: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाटक में निहित नैतिकता, सम्मान और सामाजिक मूल्य का अध्ययन करना और शकुन्तला के चरित्र के माध्यम से महिलाओं की स्थिति और संघर्षों पर विचार करना है।<br>5. प्रस्तुत प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक छंद की संरचना, विशेषताएँ और प्रयोग का गहन अध्ययन कराना, ताकि छात्र उनके स्वरूप और महत्व को समझ सकें। |
| 3 | **Course Outcomes**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र नाटक की गहराई और जटिलताओं को समझेंगे और छात्रों की विश्लेषणात्मक सोच विकसित होगी। यह न केवल नाटक की कहानी को समझने में, बल्कि कालिदास की साहित्यिक कला के प्रति उनकी सराहना को भी बढ़ाएगा।<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों को न केवल नाटक की कहानी और पात्रों के बारे में जानकारी होगी और उन्हें कालिदास की कला और साहित्यिक दृष्टि को भी समझने में मदद होगी |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र न केवल नाटक की कहानी और पात्रों के बारे में जान सकेंगे और उनके समय के सामाजिक मुद्दों को भी समझ सकेंगे । यह उन्हें भारतीय साहित्य के समृद्ध इतिहास से जोड़ने में मदद करेगा।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र नाटक के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण कर सकेंगे और उनके अंतर्निहित अर्थों को उजागर कर सकेंगे ।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों को छंदों की गहरी समझ प्रदान होगी, जिससे वे न केवल उनके स्वरूप और विशेषताओं को पहचान सकें, बल्कि उनके साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्व का भी ज्ञान प्राप्त कर सकें। यह छात्रों को साहित्यिक रचनात्मकता में एक नया आयाम प्रदान करेगा। | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | | | | |
| | यूनिट 1: कालिदास- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -एक से चार अंक तक | | 11 pds | Understanding |
| | यूनिट 2: कालिदास- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -पाँच से सात अंक तक | | (11 pds) | Understanding |
| | यूनिट 3: नाटकीय तत्वों का परिचय दशरूपक के आधार पर - (क) वस्तु- आधिकारिक, प्रासंगिक, प्रख्यात, उत्पाद्य एवं मिश्र। अर्थप्रकृति, कार्यावस्था, सन्धि (सन्ध्यंग छोड़कर) भरतवाक्य, आमुख एवं प्रस्तावना (ख) रस- विभाव, अनुभाव, सात्विक भाव, व्यभिचारिभाव तथा स्थायीभाव | | (10 pds) | Analyzing |
| | यूनिट 4: नेता- (नायक एवं नायिका के प्रकार) | | | |
| | यूनिट 5: छंद परिचय- आर्या, अनुष्टुप, इन्द्रवजा, उपेन्द्रवजा, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मंदाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित एवं स्रग्धरा। | | (10 pds) | Understanding & Analyzing |
| | UNIT 5: आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मंदाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित एवं स्रग्धरा। | | (10 pds) | Understanding & Applying |

| 5. | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition Year | Publisher |
|---|---|---|---|---|
| | दशरूपक डा0 निवास शास्त्री | धनंजय | 2021 | साहित्य भण्डार मेरठ |
| | संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास | गैरोलावाचस्पति | 2015 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | महाकवि कालिदास और अभिज्ञानशाकुन्तलम् | डा. धनश्यामअग्रवाल | 2020 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |
| | वृत्तरत्नककर | केदारभट्ट | 2014 | भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी |
| | संस्कृत साहित्य का इतिहास | त्रिपाठीरमाशंकर | 2000 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |

| | |
|---|---|
| | Program Name- B.A. SANSKRIT |
| | Status of Course & Credit: 5th SEMESTER (3 CREDITS) |
| | Course Number & Title: STM 302, ऐतिहासिक महाकाव्य एवं व्याकरण |
| | Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK |
| | Total Lectures / Semester: 52 |
| 1 | **Introduction:**<br>यास्क मुनि के कथन 'इति ऐतिहासिका:' एवं 'इतिहासमाचक्षते' से स्पष्ट है कि संस्कृत में इतिहास लिखने की परंपरा का प्रादुर्भाव वैदिक काल से ही हो गया था जो आगे रामायण-महाभारत, शिलालेखों दानपत्रों, प्रशस्तियों एवं चरितकाव्यों के रूप में चलती रही। भारतीय ऐतिहासिक कल्पना एवं पाश्चात्य ऐतिहासिक कल्पना में बहुत अंतर है जिसका ज्ञान छात्रों को इस कोर्स की माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम के द्वितीय अंश व्याकरण में छात्रों को समास एवं सामासिक प्रक्रिया का ज्ञान चयनित सामासिक शब्दों और प्रमुख सामासिक सूत्रों के माध्यम से कराया जाएग। |
| 2 | Objectives: (At least 5)<br>1. संस्कृत साहित्य में वैदिक काल से प्रादुर्भूत दीर्घ ऐतिहासिक परंपरा का ज्ञान छात्रों को प्रदान करना।<br>2. भारतीय और पाश्चात्य ऐतिहासिक मान्यता की भिन्नता का ज्ञान प्रदान करना।<br>3. पाठ्यक्रम में चयनित नवसाहसंकचरितम् के प्रथम सर्ग का पाठन कर विषय वस्तु का ज्ञान प्रदान करना।<br>4. पाठ्य अंश का भाषा, रस, छंद एवं अलंकार की दृष्टि से सौंदर्य बोध कराना।<br>5. श्लोक का सही उच्चारण और गायन का अभ्यास कर कर श्लोक स्मरण के लिए प्रेरित करना।<br>6. चयनित सामासिक शब्दों के माध्यम से सामासिक प्रक्रिया और संबंधित सूत्रों का ज्ञान प्रदान करना।<br>7. अंतिम इकाई में शतृ, शानच्, तव्यत, अनियर् प्रयोग का प्रयोग बताना तथा अनुवाद और अभ्यास करना। |
| 3 | 1. संस्कृत साहित्य में विद्यमान वैदिक काल से प्रादुर्भूत दीर्घ ऐतिहासिक परंपरा का छात्र ज्ञान प्राप्त करेंगे।<br>2. भारतीय और पाश्चात्य ऐतिहासिक मान्यता से परिचित होंगे।<br>3. नवसाहसांकचरितम् के प्रथम सर्ग के माध्यम से कवि की काव्य संबंधी विचारधारा, उज्जयिनी और नवसाहसांक जैसे नायक के गुणों को जानेंगे।<br>4. छात्र श्लोकों की भाषा, छंद, अलंकार आदि के सौंदर्य का बोध करेंगे।<br>5. श्लोक के सही उच्चारण एवं गायन द्वारा सरलता से कुछ का स्मरण रख सकेंगे।<br>6. चयनित सामासिक शब्दों के माध्यम से सामासिक-प्रक्रिया और उसमें आने वाले सूत्रों को सीखेंगे। |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 7. कुछ नित्य प्रचलित प्रत्यय जैसे तव्यत्, अनीयर, शतृ, शानच् आदि का प्रयोग कर संस्कृत में अनुवाद करना सीखेंगे। | | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | यूनिट 1: संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों का परिचय | | | 10 | Understanding |
| | यूनिट 2: पद्मगुप्त- नवसाहसांकचरितम्-प्रथम सर्ग श्लोक सं. 1-50 | | | 10 | Understanding and applying |
| | यूनिट 3: पद्मगुप्त- नवसाहसांकचरितम्-प्रथम सर्ग श्लोक सं. 51 से अन्त तक | | | 11 | Understanding and applying |
| | यूनिट 4: व्याकरण- लघुसिद्धान्त कौमुदी से प्रमुख समास एवं उनकी सूत्रगत परिभाषा | | | 11 | Understanding and applying |
| | यूनिट 5: अनुवाद- हिन्दी से संस्कृत में (समास युक्त पदों का प्रयोग करते हुए) | | | 10 | Analyzing |
| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE | |
| | संस्कृत शिक्षण सरणीआधुनिक संस्कृत साहित्य | डॉo अरुण निषाद | 2018 | गुटेन प्रकाशन, नई दिल्ली | |
| | संस्कृत साहित्य का इतिहास | डॉ. ए.बी. कीथ | 2022 | मोतीलाल बनारसी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली | |
| | आधुनिक संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास | राधावल्लभ त्रिपाठी | 2023 | न्यू भारतीय बुक कोपरेशन दिल्ली | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | लघुसिद्धांतकौमुदी | श्रीधरानंद शास्त्री | 2023 | मोतीलाल बनारसी पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली |

Program Name- B.A. SANSKRIT

Status of Course & Credit:3RD SEMESTER (3 CREDITS)

Course Number & Title: STM 303, गीतिकाव्य एवं व्याकरण

Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 PER WEEK

Total Lectures / Semester:39

1 **Introduction:**

• प्रस्तुत पाठ्यक्रम गीतिकाव्य एवं व्याकरण संस्कृत साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है।गीतिकाव्य संस्कृत साहित्य का वह स्वरुप है जिसमें काव्यमयता के साथ संगीतात्मकता प्रमुख होती है। यह न केवल भाषा की सुन्दरता को दर्शाता है अपितु उस काल की सामाजिक,सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि को भी उजागर करता है। तथाहि संस्कृत व्याकरण की उत्पत्ति वेदों से मानी जाती है,इसलिए व्याकरण को वेदांग कहा जाता है। संस्कृत को व्याकरण तथा वाक्यविन्यास की दृष्टि से सबसे जटिल भाषा माना जाता है इसलिए संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए उसका व्याकरण पढना आवश्यक है।

2 **Objectives:**

1: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को शास्त्रीय ग्रन्थों के माध्यम के से संस्कृत काव्य साहित्य की शास्त्रीय संगीत की सामान्य रुपरेखा से परिचय कराना है।

2: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत भाषा की ध्वनियां, छन्द गायन, छन्द लक्षण इत्यादि का विस्तृत ज्ञान प्रदान करना है।

3: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पाठों के साथ रचनात्मक तथा आलोचनात्मक रुप से जुडनें में सहयोग प्रदान करना है।

4: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य की समृद्ध परम्परा से परिचित कराना तथा संस्कृत भाषा के विकास और परिवर्तन को गीतिकाव्य के माध्यम से समझाना है।

5: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को लघुसिद्धान्तकौमुदी इत्यादि प्रमुख ग्रन्थों में प्रस्तुत पाणिनीय सूत्रों के विभक्ति एवं संयुग्मन के खण्डों से चयनित अंशों के आधार पर कुछ बुनियादी संस्कृत रुपात्मक शब्दों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया के ज्ञान से अवगत कराना है।

3 **Course Outcomes:**

6. .प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र शुद्ध शास्त्रीय संस्कृत में दक्षता प्राप्त कर पाएंगे तथा काव्य के अनुवाद और व्याख्या में कुशल हो सकेंगे।

7. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र कवियों के कार्यों के काव्यात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलू का बोध कर शैलियों और विचारों की सराहना करने में सक्षम हो सकेंगे।
8. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र संस्कृत के ग्रन्थों के श्लोकों का सस्वर तथा सछन्द गायन करने में समर्थ हो सकेगें।
9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में साहित्य के प्रति गहरी रुचि और समझ के साथ विष्लेषण की क्षमता विकसित होगी तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना भी विकसित होगी।
10. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र पाणिनीय व्याकरण का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर सकेगे जो कि संस्कृत साहित्य के अध्ययन के लिए आवश्यक है तथा संस्कृत व्याकरण के सूत्रों के द्वारा स्मरण शक्ति का विकास भी होगा।

| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | इकाई- 1 संस्कृत गीतिकाव्य का इतिहास | 8 | understanding |
| | इकाई- 2 भर्तृहरि- नीतिशतकम् | 9 | understanding |
| | इकाई- 3 हरिनारायण दीक्षित- श्री हनुमद्दूतम् (1-50 श्लोक) | 8 | analyzing |
| | इकाई- 4 श्री हनुमद्दूतम् एवं नीतिशतकम् का समीक्षात्मक दृष्टि से अध्ययन | 7 | Understanding and analyzing |
| | इकाई- 5 कृदन्त प्रत्यय- तव्यत्, तव्य,अनीयर्,केलिमर्,यत्,क्यप्,ण्यत्,<br>कृत् प्रत्यय- क्त,क्तवतु,शतृ,शानच्,क्त्वा,ल्यप्,तुमुन्,ण्वुल्,तृच्,ल्यु,णिनि, अच्, एवं अण् | 8 | Understanding and applying |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | भर्तृहरि- नीतिशतकम्। | डॉ किरन देवी | 2022 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | श्रीहनुमद्दूतम् | डॉ हरिनारायण दीक्षित- | 1987 | ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली |
| | संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास | राधाबल्लभ त्रिपाठी | 2020 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | लघुसिद्धांतकौमुदी | गोविन्द प्रसाद शर्मा | 2021 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |

**Course Number: STM304, Course Title: परिसंवाद एवं संगोष्ठी (PARISAMVAD EVAM SANGOSHTHI)**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 3, Periods (55mts. each)/week: 6 (L-0+T-0+P/S-6), Min.pds./sem: 78

It comprises topics of STM301, STM302 and STM303 courses for Seminar and Group Discussion.

**Course Number: STM305, Course Title: SANSKRIT LAB COURSE - III**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2022-2023

Total Credits: 1, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-0+T-1+P/S-0), Min.pds./sem: 26

संस्कृत में कथा, संवाद (गुरुशिष्य संवाद मित्र संवाद आदि ) एवं भाषण आदि के लेखन एवं वाचन का अभ्यास

**lUnHkZ xzUFk :**

bookbox.com-U Tube

महर्षि दयानन्द सरस्वती - संस्कृत वाक्य प्रबोध, दिल्ली संस्कृत अकादमी, झण्डेवाला

Learn the easy way Sanskrit.in-https://www google.com.in

**Course No.GKC351, Course Title: SC.METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS III**

Class: B.A., Status: Core Course, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 1, Periods(55 mts. each)/week:2(L-2+ T -O+P/S-O), Min.pds./sem. :26

UNIT 1: SCIENCE - Some basic definitions of Scientific terms.

UNIT 2: SCIENCE - Human Physiology and anatomy, Hygiene, Drugs, Diseases, Health Organizations.

UNIT 3: SCIENCE - Information Technology - basic terminology, development in India, Bio-technology - basic terminology, important centres in India and World.

UNIT 4: SCIENCE - Inventions and discoveries, Indian Space Programmes, Atomic energy in India, Research centres and Laboratories in India.

UNIT 5: ENVIRONMENTAL STUDIES-POLLUTION AND DISASTER MANAGEMENT

Definition, Causes, Effects and Control Measures of Air, Water, Soil, Marine, Noise and Thermal Pollution, Radiation Pollution, Nuclear Hazards, Solid Waste Management, Role of an Individual in Prevention of Pollution. Floods, Earthquake, Cyclone and Land Slides.

SUGGESTED READING:
NCERT: TEXT BOOKS ON HISTORY, GEOGRAPHY, CIVICS MANORAMA YEAR BOOK
MR Agarwal: GENERAL KNOWLEDGE DIGEST
NEWS PAPAERS AND MAGAZINES:
HINDI & ENGLISH DAILY NEWS PAPERS INDIA TODAY
COMPETITION MASTER SPORTS STAR
COMPETITION SUCCESS REVIEWS YOJNA

Program Name- B.A. SANSKRIT

Status of Course & Credit: 4th SEMESTER (3 CREDITS)

Course Number & Title: STM 401, वेद एवं वेदाङ्ग

Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 PER WEEK

Total Lectures / Semester: 39

1

**Introduction:**

वेदों में उल्लिखित मंत्रों अथवा श्लोक को सूक्त कहा जाता है । सूक्त प्राचीन भारतीय संस्कृति और धार्मिकता का आधार हैं । प्रत्येक सूक्त एक विशेष भावना , देवता या प्रकृति के तत्वों के प्रति समर्पित होता है । सूक्त मंत्रों के रूप में होते हैं और इनमें ध्यान , प्रार्थना आदि के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न अनुष्ठान होते हैं ।वैदिक सूक्त भारतीय दर्शन , तत्विकता और जीवन के गहरे अर्थ को प्रस्तुत करते हैं । प्रत्येक सूक्त में गहनता और आध्यात्मिकता होती है जो मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत प्रस्तुत करती है ।
पाणिनी शिक्षा संस्कृत व्याकरण के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसे महर्षि पाणिनी के लेखन पर आधारित माना जाता है ।इसमें उच्चारण , स्वर , व्यंजन और अन्य भाषाई तत्वों के नियमों का स्पष्ट वर्णन किया गया है । यह ग्रंथ न केवल व्याकरण के लिए बल्कि संस्कृत साहित्य और भाषा शास्त्र के अध्ययन में भी महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है ।यह ग्रंथ भारतीय भाषाई परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्तंभ है और संस्कृत की समृद्धि को बनाने रखने में सहायक है ।
निरुक्त एक प्राचीन ग्रंथ है जिसे आचार्य यास्क ने लिखा है । यह ग्रंथ विशेष रूप से संस्कृत भाषा की शब्दों के अर्थ और उनकी व्युत्पत्ति पर केंद्रित है ।आचार्य यास्क का उद्देश्य वेदों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ को स्पष्ट करना और उन्हें सही संदर्भ में प्रस्तुत करना है ।निरुक्त का मुख्य विषय वेदों में पाए जाने वाले कठिन शब्दों और उनके अर्थों का विश्लेषण करना है इसमें शब्दों की उत्पत्ति उनके विभिन्न अर्थ और भाषा के प्रयोग के विभिन्न पहलुओं का विस्तार से वर्णन किया गया है ।यह ग्रंथ भारतीय भाषा शास्त्र और व्याकरण की अध्ययन में एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है ।

2

Objectives: (At least 5)

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों मेंआध्यात्मिक विकास और प्रकृति के प्रति श्रद्धा , सम्मान और संरक्षण की भावना विकसित करना हैसाथ हीसूक्त में विभिन्न देवताओं की पूजाऔर उनकी महिमा इत्यादि का वर्णन एवंयज्ञों एवं धार्मिक अनुष्ठानों में होने वाले आवश्यक नियमों का ज्ञान कराना है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य समस्त वैदिक साहित्य, संहिताओं, आख्यानों इत्यादि का गहन ज्ञान कराना है साथ ही छात्र मंत्र जाप से मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होगाजिससे उसके कार्य प्रदर्शन में वृद्धि होगी<br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को व्याकरणिक सिद्धांतों को स्पष्ट कराना एवं इससे शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराना है। इससे छात्र को धातु, प्रत्यय, उपसर्ग इत्यादि व्याकरण ज्ञान में वृद्धि होगी ।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत शब्दों के अर्थ और व्युत्पत्ति को स्पष्ट करना हैसाथ ही शब्दों के संदर्भ में सही अर्थ समझाने का प्रयोग प्रयास करना है ।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य व्याकरण निरुक्त इत्यादि से संबंधित गहन ज्ञान करना है । | | |
| 3 | **Course Outcomes (CO1: (At least 5)**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम की अध्ययन के उपरांत छात्रों मेंशारीरिक और मानसिक तथा आध्यात्मिक प्रगति होगी ।अध्ययन के उपरांत छात्र संस्कृत भाषा की गहरी समझ होगी और वे उच्चारण कर सकेंगे जिनसे उनके भाषा कौशल में वृद्धि होगी ।<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांतछात्र में सकारात्मक विचारधारा विकसित होगी एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होगी ।पाठ्यक्रम में उल्लेखित विभिन्न सूक्त आधुनिक विज्ञान और तर्क के सिद्धांतों से मेल खाते हैं जो भविष्य में ज्ञान के नए आयाम को खुलेंगेजिससे छात्रा शोध कार्य में भी प्रवृन हो सकेगा ।<br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में शब्दावली का विस्तार होगा, भाषाई विश्लेषण क्षमता में वृद्धि होगी, उनके उच्चारण में सुधार होगा तथा व्याकरण दक्षता संभव हो सकेगी ।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में संस्कृत शब्दों के अर्थ और उनकी व्युत्पत्ति की गहरी समझ विकसित होगी । निरुक्त के अध्ययन से भाषा के उपयोग में सुधार होगा तथासंवाद में स्पष्ट और प्रभावशीलता बढ़ेगी ।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांतछात्र की भाषाई दक्षता में वृद्धि होगी शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी और वह संस्कृत साहित्य के विविध विधाओं से परिचित हो सकेगा | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture (s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | यूनिट 1:डॉ. कृष्णलाल- वैदिकसंग्रहः<br>(1) नासदीयसूक्तम् (ऋ. 1/129). (2) हिरण्यगर्भसूक्तम् (ऋ. 10/121), (3) पुरुषसूक्तम् (ऋ.10/90), (4) शिवसंकल्पसूक्तम् (यजु, अध्याय 34) (5) संज्ञानंसूक्तम् 10/191 तथा 'चरैवेति' ऐ.ब्रा. 33/3/1- | 10 | Understanding |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 2 | | |
| | यूनिट 2: पठित सूक्तों का विश्लेषणात्मक अध्ययन | 10 | Understanding and applying |
| | यूनिट 3:पाणिनीयशिक्षा- १-३० | 11 | Understanding |
| | यूनिट 4:निरुक्तप्रथमअध्याय (तृतीयपादकोछोड़कर) | 11 | Understanding |
| | यूनिट 5: वेदएवंवेदाङ्गसाहित्यपरपरिचयात्मकप्रश्न | 10 | Understanding & Analyzing |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | वैदिक साहित्य का इतिहास | आचार्य बलदेव उपाध्याय | | |
| | वैदिक संग्रह | श्री कृष्ण कुमार | | |
| | आधुनिकसंस्कृतसाहित्यकासमग्र इतिहास | राधावल्लभत्रिपाठी | 2023 | न्यूभारतीयबुककोपरेशनदिल्ली |
| | वैदिक एवं वेदांग साहित्य की रूपरेखा | राजेश्वर प्रसाद मिश्र | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A. Fourth Semester | | | |
| Status of Course & Credit: Major courses & 3 Credit | | | |
| Course Number & Title:STM 402, रामायण, महाभारत एवं पुराण | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: L-39 | | | |
| Total Lectures / Semester: Fifth | | | |
| 1 | **Introduction:**<br>विश्व की समस्त संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति प्राचीनतम है। भारतीय संस्कृति सहस्त्रों वर्ष प्राचीन है, यह सर्वजन कल्याणकारी, आध्यात्मिक, कर्तव्यपरायण एवं देवमय संस्कृति हैं। रामायण, महाभारत एवं पुराण भारत के प्राचीन धार्मिक ग्रंथ है; रामायण जहां आदर्शों की पराकाष्ठा है वही महाभारत का ज्ञान भी भावनात्मक संतुलन पर बल देता है तया पुराण भी भारतीय संस्कृति के आधारभूत ग्रंथ हैं विश्वाजनीन भारतीय संस्कृति के गौरवान्वित ज्ञान हेतु पुराणों का अन्वेषण अनिवार्य है। यह ग्रंथ सर्वदेशिक सर्वांगीण तथा सर्वजनों उपयोगी युगों की संस्कृति को अपने में समाहित करके भारतीय संस्कृति की अनेक विचारधाराओं को सुव्यवस्थित करते है।<br>• This paper aims to | | |
| 2 | **Objectives: (At least 5)**<br><br>1: पर्यावरण का मनोवैज्ञानिक प्रभाव<br>2: (i) महाभारत थर्म और न्याय की स्थापना का ज्ञान (ii) आत्मा का अमरत्व एवं स्वधर्म का पालन<br>3: सम्पूर्ण रामायण महाभारत एवं गीता का संक्षेप में जान तथा इनके दार्शनिक तथ्यों पर चर्चा<br>4: मानव जीवन में मित्रता का प्रभाव<br>5: आर्ष ग्रन्थों की वर्तमान में आवश्यकता | | |
| 3 | **Course Outcomes:**<br><br>1: प्रकृति के सानिध्य का मन और बुद्धि पर प्रभाव<br>2: मानव जीवन में आध्यात्मिक विकास की महत्वता<br>3: आचार निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता का समाज पर प्रभाव<br>4: मित्रत्व भाव में सम विषम परिस्थितियो की न्यूनता<br>5: प्राचीन ग्रंथो के अध्ययन से सदाचार एवं नैतिकता का ज्ञान<br>After completion of the course, students will be able to: | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | Unit - I रामायण - पम्पा सरोवर वर्णन | 7 Pds | Understanding |
| | Unit - II (i) महाभारत वनपर्व 132-134 अध्याय<br>(ii) श्रीमद्भागवत गीता द्वितीय अध्याय | 8 Pds | Understanding |
| | Unit - III रामायण महाभारत और गीता का समालोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन | 8 Pds | Analyzing |
| | Unit - IV पुराणों का ऐतिहासिक परिचय एवं श्रीमद्भागवत पुराण | 8 Pds | Remembering |
| | Unit - V श्रीमद्भागवतपुराण दशमस्कन्ध - अध्याय ८०-८१ | 8 Pds | Evaluating |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOUR | Edition,Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | मूल-रामायणम् | डॉ, कृष्णमणि त्रिपाठी | 2014 | गीता प्रेस गोरखपुर |
| | महाभारत | गीता प्रेस गोरखपुर | 2016 | गीता प्रेस गोरखपुर |
| | श्रीमद्भगवद्गीता | गीता प्रेस गोरखपुर | 2019 | गीता प्रेस गोरखपुर |
| | श्रीमद्भभागवतपुराण | गीता प्रेस गोरखपुर | 2018 | गीता प्रेस गोरखपुर |
| | पुराण विमर्श | आचार्य बलदेव उपाध्याय | 2015 | चौरांबा विद्या भवन |

| | |
|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | |
| Status of Course & Credit:4th SEMESTER (3 CREDITS) | |
| Course Number & Title: STM 403, व्याकरण अनुवाद एवं रचना | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 PER WEEK | |
| Total Lectures / Semester:39 | |
| 1 | **Introduction:**<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम व्याकरण अनुवाद एवं रचना परस्पर सम्बन्धात्मक पाठ्यक्रम है । यह पाठ्यक्रम व्याकरण अध्ययन से लेकर ग्रन्थ रचना तक का मार्ग प्रशस्त करता है। |
| 2 | **Objectives: (At least 5)**<br>1:प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पाणिनीय व्याकरण को सीखने में सक्षम बनाना है।<br>2: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को शब्दों की निर्माण प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना है।<br>3: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को लघुसिद्धान्तकौमुदी इत्यादि प्रमुख ग्रन्थों में प्रस्तुत पाणिनीय सूत्रों के विभक्ति एवं संयुग्मन के खण्डों से चयनित अंशों के आधार पर कुछ बुनियादी संस्कृत रुपात्मक शब्दों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया के ज्ञान से अवगत कराना है।<br>4: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पाणिनीय व्याकरण की सूत्रात्मक तकनीकी से परिचित कराना है।<br>5: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत भाषा में लेखन तथा पाठन में कुशल बनाना है। |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>11. .प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों को शब्दों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया को सीखने से संस्कृत के उच्चारण का गहन ज्ञान प्राप्त होगा ।<br>12. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र पाणिनीय व्याकरण का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर सकेगे जो कि संस्कृत साहित्य के अध्ययन के लिए आवश्यक है तथा संस्कृत व्याकरण के सूत्रों के द्वारा स्मरण शक्ति का विकास भी होगा।<br>13. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र विभिन्न गणों से सम्बन्धित धातुओं के संयोजन की तकनीकी से सुसज्जित हो जाएंगे।<br>14. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र अनुवाद कार्य में कुशल हो जाएंगे।<br>15. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त शुद्ध शास्त्रीय संस्कृत में दक्षता प्राप्त कर पाएंगे तथा अनुवाद और व्याख्या में कुशल हो सकेंगे। |

| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | इकाई 1 - सुबन्तप्रक्रिया ( अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त) तीनों लिंगों में। | 10 | understanding |
| | इकाई 2 - तिड्न्तप्रकिया भू धातु( लट्,लोट्,विधिलिंड्,लंड्, एवं लृट्लकार) | 10 | understanding |
| | इकाई 3 - एध् धातु पांचलकारों में | 5 | analyzing |
| | इकाई 4 - अनुवाद हिन्दी से संस्कृत में | 6 | Understanding and analyzing |
| | इकाई 5 - निबन्ध- सामान्य एवं साहित्यिक विषयों पर संस्कृत भाषा में। | 8 | Understanding and applying |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | भर्तृहरि-नीतिशतकम्। | डॉ किरन देवी | 2022 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | श्रीहनुमद्दूतम् | डॉ हरिनारायण दीक्षित- | 1987 | ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली |
| | संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास | राधाबल्लभ त्रिपाठी | 2020 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | लघुसिद्धांतकौमुदी | गोविन्द प्रसाद शर्मा | 2021 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | | | | |

**Course Number: STM404, Course Title: परिसंवाद एवं संगोष्ठी**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2014-15

Total Credits: 3, Periods (55mts. each)/week: 6 (L-4+T-0+P/S-6), Min.pds./sem: 78

It comprises topics of STM401, STM402 and STM403 courses for Seminar and Group Discussion.

**Course Number: STM405, Course Title: संस्कृत लैब कोर्स- IV**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2022-23

Total Credits: 1, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-0+T-1+P/S-0), Min.pds./sem: 26

आधुनिक कविता एवं संस्कृत काव्य विधाओं का संकलन एवं गायन

सन्दर्भग्रन्थ:

Ramesh Bhai Ojha - https://m.utube.com

**Course No. GKC451, Title: SC. METH. G.K. & CURRENT AFFAIRS IV**

Class: BBM/BSSc/BA/BCom/BSc/BSc Engg., Status: Core, Approved since session: 2004-05

Total Credits: 1, Periods (55 mts. each)/week:1(L-1+ T -O+P/S-O), Min.pds./sem. :13

UNIT 1: LITERATURE

Well known Books and their authors (Indian and Foreign). Foreign Words and phrases in common use. Nobel Prizes.

UNIT 2: INDIAN CINEMA

History and Important Personalities, Academic and other Institutions, Classical Dances of India, Who is Who?

UNIT 3: Abbreviations, Sobriquets, Superlatives

UNIT 4: SPORTS & GAMES

Olympic Games - History, Games Played.

UNIT 5: ENVIRONMENTAL STUDIES-SOCIAL ISSUES

(a) Social Issues and the Environment - From Unsustainable to Sustainable Development, Water Conservation, Rain Water Harvesting, Environmental Ethics, Climate Change, Global Warming

(b) Human Population and the Environment - Population Growth, Environment and Human Health, Human Rights, Value Education, HIV/AIDS, Women and Child Welfare, Role of Information Technology in Environment and Human Health.

SUGGESTED READING:

NCERT: TEXT BOOKS ON HISTORY, GEOGRAPHY, CIVICS, MANORAMA YEAR BOOK

MR Agarwal: GENERAL KNOWLEDGE DIGEST

NEWS PAPAERS AND MAGAZINES:

HINDI & ENGLISH DAILY NEWS PAPERS INDIA TODAY

COMPETITION MASTER, SPORTS STAR, COMPETITION SUCCESS REVIEWS, YOJNA

**Course Number: CAC451, Course Title: CO-CURRICULAR ACTIVITIES**

Class: B.A., Status of course: MAJOR COURSE, Approved since Session: 2015-16
Total Credits: 3, Periods: 55 min. each (L-0+T-0+P/S-1), Min.Pds./Sem.:13
To encourage students in cultural activities viz. Dramatics & Music Competition, Games & Sports and literary activities viz. Hindi & English Essays, Hindi & English Debate Competition to have overall development of the student.

| | |
|---|---|
| | Program Name- B.A (VI Semester) |
| | Status of Course & Credit: Major Course (4 Credits) |
| | CourseNumber&Title:STM 501, संस्कृत वाङ्मय में वैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ |
| | Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week |
| | Total Lectures Semester: 52/ semester |
| | |
| | **Introduction: संस्कृत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भारत में वैदिक काल से ही हुआ है । इन ग्रंथों में चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, भूकम्प लक्षण आदि का सटीक और विस्तृत वर्णन मिलता है। उदाहरणस्वरूप वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी जो योगदान दिया, वह न केवल उस समय प्रासङ्गिक था, बल्कि आधुनिक समय में भी प्रासङ्गिक है । इसी प्रकार, चरक और सुश्रुत जैसे वैज्ञानिकों ने चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अपने अग्रणी कार्यों द्वारा एक प्रगतिशील वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।** |
| 1 | **Objectives: (At least 5) उद्देश्य**<br><br>**1 छात्रों को प्राचीन भारतीय शास्त्रीय साहित्य जानने में सक्षम बनाना।**<br>**2 कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों और ज्ञान का सृजन करने वाले लेखकों का ज्ञान प्रदान करना**<br>**3. चिकित्सा विज्ञान, भूकम्प लक्षण, पर्यावरण ज्ञान आदि पर प्रशिक्षण।**<br>**4 छात्रों को प्राचीन ज्ञान प्रणाली की अपनी समझ प्रदर्शित करने के लिए तैयार करना।**<br>**5 चरक , सुश्रुत , वाग्भट्ट एवं प्राचीन वैदिक ऋषियों के योगदान का परिचय देना।** |
| 2 | **Course Outcomes:**<br><br>**1. विद्यार्थी भारतीय शास्त्रीय परंपरा के लंबे इतिहास को समझने में सक्षम होंगे।**<br><br>**2. विद्यार्थी भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में अपनी समझ प्रदर्शित करने में सक्षम होंगे।**<br><br>**3. प्राचीन वैज्ञानिक विचारों और उपलब्धियों के कुछ पहलुओं के बारे में अधिक जागरूक हो जायेंगे।**<br><br>**4. संस्कृत वाङ्मय के प्राचीन वैज्ञानिक ग्रंथों से परिचित होंगे।** |

| | |
|---|---|
| | **5. वैदिक ऋषियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर किए गये प्रयास जानेंगे ।** |

| | Course Contents (not as running matter, should be point wise with Title of Unit | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | इकाई 1 संस्कृत वाङ्मय में निहित वैज्ञानिक प्रवृत्तियों का सामान्य परिचय | 12 pds | Understanding |
| | | | |
| | इकाई 2 चरकसंहिता सूत्रस्थान दीर्घजीवितीयाध्याय (सूत्र- ५३-७३तक) | (10 pds) | Understanding |
| | इकाई 3: बृहत्संहिता - भूकम्प लक्षणाध्याय | (10 pds) | Creating |
| | इकाई 4: चरकसंहिता तथा बृहत्संहिता का आयुर्वेद के क्षेत्र में योगदान | (10 pds) | Analyzing |
| | इकाई 5 वैदिक संवादसूक्त- पुरुरवा-उर्वशी, सरमा-पणि, विश्वामित्र- नदी | (10 pds) | Applying |

| 5 | **TEXTBOOKS** | **Auther** | **Edition, Year, Publisher** | **PLACE** |
|---|---|---|---|---|
| a | ऋग्वेद संहिता | पं श्रीराम शर्मा आचार्य | 2020 | ब्रह्मवर्चस , शांतिकुंज, हरिद्वार |
| b | अथर्ववेद संहिता | पं श्रीराम शर्मा आचार्य | 2020 | ब्रह्मवर्चस , शांतिकुंज, हरिद्वार |
| c | चरक संहिता | पं काशीनाथ पांडेय डॉ गौरवनाथ चतुर्वेदी | 2020 | चौखंबा संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली |
| d | बृहत्संहिता | पं अच्युतानंद झा | 2021 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |

<table>
<tr><td colspan="2">Program Name- B.A (VI Semester)</td></tr>
<tr><td colspan="2">Status of Course & Credit: Major Course (4 Credits)</td></tr>
<tr><td colspan="2">Course Number & Title: STM 502, लौकिक संस्कृत साहित्य- गद्य एवं चम्पूकाव्य</td></tr>
<tr><td colspan="2">Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: L-</td></tr>
<tr><td colspan="2">Total Lectures / Semester: Fifth</td></tr>
<tr><td>1</td><td>Introduction:<br>कादंबरी विश्व के गद्यकाव्योंमें असाधारण है । बाणभटकि यहरचना कथानक की दृष्टि से अलंकारों की दृष्टि से, वर्णनीय विषयों की व्यापकता की दृष्टि से, शास्त्रीय पाण्डित्य की दृष्टि से, और भी अन्य किसी भी दृष्टि से निरीक्षण करने पर लोकोत्तरता सर्वजनसम्मत है । कादंबरी में बाणभट्ट ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से समस्त विषयों का आकलन कर अपनी लेखनी से इस रचना को उद्भाषित किया है । इसकी भाषा शैलीवर्णन की मधुरता और व्यापकता के कारण हीबाणभट्ट“ बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्”कीउपाधि से विभूषित किया गया निश्चित ही छात्र इसरचनाकाअध्ययनकर अपनी वैचारिक दृष्टि को अधिक सूक्ष्म और व्यापक करपायेंगे।<br>• This paper aims to</td></tr>
<tr><td>2</td><td>Objectives:<br>1. तत्कालीन धार्मिक सामाजिक औरराजनीतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान<br>2. प्राकर्तिक सौंदर्य का ज्ञान<br>3. सांस्कृतिकधरोहर का संरक्षण<br>4. चंपू काव्य का महत्व<br>5. गद्य साहित्य के विकास की परंपरा, अभिलेख का महत्व, चंपू साहित्य की प्राचीनता</td></tr>
<tr><td>3</td><td>Course Outcomes<br>1-बाणभट्ट की सूक्ष्मशैली से परिचित हुए एवं तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त किया<br>2-प्रकृति के महत्व को जाना<br>3-अभिलेखों के माध्यम से प्राचीन सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त किया<br>4-चंपूकाव्य का महत्व<br>5-संस्कृत गद्य साहित्य की ऐतिहासिक परंपरा का, प्राचीन सामाजिक व्यवस्था से परिचित तथा चंपू साहित्य की प्राचीन परंपरा का ज्ञान प्राप्त किया ।</td></tr>
</table>

| | | | |
|---|---|---|---|
| | After completion of the course, students will be able to:<br>• | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit - I कादंबरी पृष्ठ संख्या.1-100 महच्चित्रम तक | 8 Pds | Understanding |
| | Unit - II कादंबरी पृष्ठ संख्या.101-200 ' मदुपभुक्तेडशेषमक रोदशनम्' तक | 8 Pds | Understanding |
| | Unit - III अभिलेख- गुप्त सम्राटों के निम्न अभिलेखगिरनार(जूनागढ़ रुद्रदमन का प्रस्तरअभिलेख)(२) महाराज चंद्र का लेखसमुद्रगुप्त का लेख)(३) समुद्रगुप्तका प्रयाग स्तम्भ अभिलेख (४)स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ (५) चालुक्य राज पुलकेशिनद्वितीयका ऐहोलभिलेख | 7 Pds | Analyzing |
| | Unit - IV वेंकटधवरिकृत विश्वगुणादशचंपू मूल से अयोध्या वर्णन तक, मूलसे पृ.सं.६३तक, श्लोक संख्या ७३ तक | 8 Pds | Remembering |
| | Unit - V संस्कृत गद्य, अभिलेख एवं चंपू साहित्य का इतिहास | 8 Pds | Evaluating |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 5 | TEXTBOOKS | AUThour | Edition, Year, Publisher | PLACE |
| | कादंबरी | श्री राम तेज शास्त्री | 2012 | चौखम्बा विद्या भवन,दिल्ली |
| | अभिलेख माला | पंडित रमाकांतझा पंडित हरिहरझा | 2013 | चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी |
| | कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्यनन | वासुदेव सरन अग्रवाल | 2016 | चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी |
| | बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन | अमरनाथ पांडेय | 2018 | जेनेरिक पब्लिकेशन्स दिल्ली |

Program Name- B.A. SANSKRIT

Status of Course & Credit: 5TH SEMESTER (3 CREDITS)

Course Number & Title: STM 503, **संस्कृत व्याकरण**

Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 3 PER WEEK

Total Lectures / Semester:39

1 **Introduction:**

• प्रस्तुत पाठ्यक्रम  संस्कृत व्याकरण संस्कृत भाषा के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पहलू है वेदों से लेकर संस्कृत के लौकिक साहित्य का अध्ययन करने के लिए संस्कृत व्याकरण पढना आवश्यक है।

2 **Objectives: (At least 5)**

1:प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत भाषा के व्याकरणिक नियमों की गहनता का बोध कराना तथा यह पाठ्यक्रम उन्हें शब्दों का लिंग ज्ञान और प्रयोग करने में सक्षम बनाता है।

2: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को महाभाष्य आदि ग्रन्थों के माध्यम से व्याकरण दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित भाषा दर्शन की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं से परिचित कराना है।

3: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पतञ्जलि महाभाष्य के माध्यम से जीवन में संस्कृत व्याकरण की महत्ता को प्रतिपादित करना है।

4: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत व्याकरण की विभिन्न प्रणालियों की उत्पत्ति और विकास से परिचित कराना है।

5: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सिद्धान्तकौमुदी के पाठ के माध्यम से प्राथमिक प्रत्ययों और उन प्रत्ययों के साथ समाप्त होने वाले शब्दों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया के ज्ञान को प्रदान करना है।

3 **Course Outcomes:**

16. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र शब्दों के लिंग ज्ञानानुसार संस्कृत संवाद में सक्षम होंगे।
17. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र पाणिनीय व्याकरण को केन्द्र भाषा दर्शन के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।
18. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र व्याकरण के अध्ययन के महत्व, प्रासंगिकता और उद्देश्यों को समझ सकेंगे।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 19. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों को पाणिनीय व्याकरण की अष्टाध्यायी परम्परा और कौमुदी परम्परा का गहरा ज्ञान हो जाएगा तथा पाणिनीय व्याकरण के निर्माण में अलग-अलग आचार्यों के योगदान का बोध हो जाएगा।<br>20. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र संस्कृत के प्रत्ययों की संरचनात्मक प्रक्रिया का तथा अर्थगत विशेषता को जान सकेंगे। | | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit - I संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास | | | 8 | Understanding and applying |
| | Unit - II महाभाष्य प्रथमाह्निक ( प्रारम्भ से प्रयोजन तक) | | | 8 | Understanding |
| | Unit - III महाभाष्य प्रथमाह्निक का शेष अंश | | | 8 | Understanding |
| | Unit - IV लघुसिद्धान्तकौमुदी तद्धित प्रत्यय (मत्वर्थीय, भावार्थक, अपत्यार्थ) | | | 8 | Understanding and applying |
| | Unit - V पाणिनीय लिंगानुशासनम् | | | 7 | Analyzing |
| | | | | | |
| 5 | TEXTBOOKS<br><br>1. पाणिनीय लिंगानुशासनम् | AUTHOR(s)<br><br>डॉ नरेश झा | Edition, Year, Publisher<br><br>2011 | PLACE<br><br>चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी | |
| | 2. महाभाष्य | प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी- | 2022 | चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 3. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास | युधिष्ठिर मीमांसक | 2020 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | 4. लघुसिद्धांत कौमुदी | गोविन्द प्रसाद शर्मा | 2021 | रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत , हरियाणा |
| | | | | |

| | |
|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | |
| Status of Course & Credit: 5th SEMESTER (3 CREDITS) | |
| Course Number & Title: STM 504, **भाषाविज्ञान** | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK | |
| Total Lectures / Semester: 52 | |
| 1 | **Introduction:**<br>सतत् गतिशील एवं प्रवाहमान भाषा व्यक्तिमात्र के लिए अपरिहार्य है। भाषा, विचार और अनुभव की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं एकमात्र साधन है। भाषा के बिना मानव-जीवन की कल्पना असंभव है । भाषा के द्वारा ही हम अपने पूर्वजों के विचार एवं अनुभव प्राप्त करते हैं।यह भाषा क्या है ? इसकी आवश्यकता क्यों हुई? इसकी उत्पत्ति कैसे हुई? भाषा-परिवार क्या हैं? संस्कृत को इस परिवार की प्रतिनिधि भाषाओं में क्यों रखा गया है? नाम, अख्यात, उपसर्ग और निपात एवं प्रत्यय भाषा को कैसे प्रभावित करते हैं, इनका व्याकरण एवं भाषाविज्ञान की दृष्टि से क्या महत्व है? भाषा निर्माण में प्रत्यय संयोजन की वैज्ञानिकता जिसके कारण पाणिनि-संस्कृत-व्याकरण विश्व- प्रसिद्ध है, का ज्ञान होना चाहिए। वाक्य निर्माण की दृष्टि से व्याकरण एवं भाषा विज्ञान में क्या अंतर है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए भाषाविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है । |
| 2 | Objectives:<br>1. भाषा एवं भाषाविज्ञान का अर्थ परिभाषा एवं उत्पत्ति व विकास के कर्म का ज्ञान कराना।<br>2. भाषा विज्ञान के विभिन्न अंगों का परिचय एवं अन्य शास्त्रों के साथ भाषाविज्ञान के संबंध का ज्ञान कराना ।<br>3. विभिन्न भाषा परिवारों का परिचय तथा भारोपीय-परिवार की प्रतिनिधि भाषा के रूप में संस्कृत भाषा का परिचय कराना।<br>4. भाषाविज्ञान के नामकरण के संबंध में यूरोपीय एवं भारतीय मतों की समीक्षा तथा भाषाविज्ञान का मूल उत्पत्ति- स्थान संस्कृत व वैदिक साहित्य है, इस विषय से संबंधित भारतीय मत और ग्रंथों का अध्ययन कराना।<br>5. भाषाविज्ञान के भारोपीय - परिवार की प्रतिनिधि भाषाएं संस्कृत एवं लैट्रिन है इसका परिचय कराना ।<br>6. वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में क्या भेद है, इसका परिचय कराना ।<br>7. ध्वनिविज्ञान, पदविज्ञान, शब्दविज्ञान एवं अर्थविज्ञान का ज्ञान कराना।<br>8. समान वाक्यों का प्रयोग करने पर भी अर्थ में परिवर्तन क्यों हो जाता है? इसका भाषाविज्ञान की दृष्टि से अध्ययन करना । |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1. विद्यार्थी भाषा का अर्थ, परिभाषा, विशेषताएं एवं उत्पत्ति व विकास के कारणों को समझ सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी भाषा विज्ञान के अंगों का परिचय एवं भाषा विज्ञान का अन्य शास्त्रों के साथ संबंध समझ सकेंगे।<br>3. भरोपीय-भाषा-परिवार का परिचय, भारोपीय-भाषा परिवार का संस्कृत के साथ संबंध एवं भारोपीय-भाषा - परिवार से संबंधित अन्य विविध विषयों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।<br>4. संस्कृत पद- संरचना, सुबंत एवं तिगंत प्रयोग तथा वाक्य निर्माण में उपसर्ग एवं निपातों का महत्व समझ सकेंगे ।<br>5. भाषा विज्ञान के अध्ययन से विद्यार्थी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत भाषा अंतर समझ सकेंगे।<br>6. पद संरचना में नाम एवं आख्यात की महत्वपूर्ण भूमिका को विधिवत् समझ सकेंगे ।<br>7. वाक्य परिवर्तन एवं अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएं समझ सकेंगे । | | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | यूनिट 1: भाषा की उत्पत्ति, रूपरेखा, क्षेत्र, भाषाओं का वर्गीकरण | | | 10 | Understanding |
| | यूनिट 2: ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएँ, ध्वनिनियम | | | 10 | Understanding and applying |
| | यूनिट 3: पद-विज्ञान | | | 11 | Understanding and applying |
| | यूनिट 4: वाक्य-विज्ञान | | | 11 | Understanding and applying |
| | यूनिट 5: अर्थविज्ञान, भाषा की प्रकृति एवं भाषा का, प्राकृत एवं अपभ्रंश। | | | 10 | Analyzing |
| 5 | TEXTBOOKS<br>भाषाविज्ञान | AUTHOR(s)<br>डा. भोलानाथ | Edition, Year, | PLACE<br>किताब घर इलाहाबाद | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | तिवारी | Publisher<br><br>2019 | |
| | तुलनात्मक भाषाविज्ञान | डा. मंगलदेव शास्त्री | 2019 | साहित्य भवन लिमिटेड इलाहाबाद |
| | सामान्य भाषाविज्ञान | डा. बाबुराम सक्सेना | 2020 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन |
| | संस्कृत भाषाविज्ञान | डा. भोलाशंकर व्यास | 2021 | रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत , हरियाणा |
| | | | | |

**Course Number: STM505, Course Title: सत्रीय निबन्ध एवं मौखिकी**

Class: B.A., Status of Course: MAJOR COURSE, Approved since session: 2016-17

Total Credits: 2, Periods (55mts. each)/week: 3 (L-0+T-0+P/S-3), Min.pds./sem: 39

**Course NumberSTM506, Course Title: सेमिनार एवं समूहचर्चा**

Class: B.A., Status of Course: **ABILITY ENHANCEMENT-SDG**, Approved since session: 2022-23

Total Credits: 1, Periods (55mts. each)/week: 2 (L-0+T-1+P/S-0), Min.pds./sem: 26

**Course Number: SIC 501, Course Title**: **ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप कोर्स** (SUMMER INTERNSHIP)

Class: B.A., Status of Course: SKILL ENHANCEMENT, Approved since session: 2022-23

Total Credits: 3

**(**चतुर्थ सेमेस्टर की समाप्ति पर छात्र इंटर्नशिप/प्रशिक्षण के लिए जाएंगे एवं मूल्यांकन पांचवें सेमेस्टर में किया जाएगा)

| |
|---|
| Program Name- B.A (VI Semester) |
| Status of Course & Credit: Major Course (4 credits) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Course Number & Title:STM 601, उपनिषद् एवं दर्शन | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week | | | |
| Total Lectures / Semester: 52/ semester | | | |
| | | | |
| | **Introduction: औपनिषदिक एवं दार्शनिक ज्ञान छात्र के व्यक्तिगत , आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। ये छात्र को आत्मिक और मानसिक रूप से विकसित करने का कार्य करते है।** | | |
| 1 | **Objectives:**<br><br>**1 आत्मज्ञान**<br>**2 सर्वोच्च सत्य ( ब्रह्म) की खोज**<br>**3 बुद्धि और विवेक का विकास**<br>**4 जीवन के रहस्यों को समझना**<br>**5 आध्यात्मिक मार्गदर्शन**<br>**6 मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक शांति**<br>**7 समग्र दृष्टिकोण का विकास** | | |
| 2 | **Course Outcomes:**<br><br>**1 आध्यात्मिक विकास**<br>**2 तार्किक और बौद्धिक विकास**<br>**3 नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास**<br>**4 मानसिक शांति और स्थिरता**<br>**5 व्यापक दृष्टिकोण का विकास**<br>**6 सृजनात्मकता और अभिव्यक्ति** | | |
| | **Course Contents (not as running matter, should be point wise with Title of Unit** | **Period Number of Lecture (s)** | **Bloom's Taxonomy Learning outcome** |
| | इकाई 1: उपनिषदों का सामान्य परिचय एवं प्रतिपाद्य | 12 pds | Understanding |
| | इकाई 2 कठोपनिषद् - प्रथम अध्याय | (10 pds) | Understanding |
| | इकाई 3: छान्दोग्योपनिषद्- षष्ठ प्रपाठक | (10 pds) | Creating |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | इकाई 4: तर्कभषा - प्रारम्भ से प्रत्यक्ष निरूपण पर्यन्त | (10 pds) | Understanding |
| | इकाई 5 तर्कभाषा - अनुमान से शब्द प्रमाण तक | (10 pds) | Understanding |

| 5 | **TEXTBOOKS** | **Auther** | **Edition, Year, Publisher** | **PLACE** |
|---|---|---|---|---|
| a | छांदोग्योपनिषद् | हरिकृष्णदास गोयंदका | 2021 | गीताप्रेस गोरखपुर |
| b | ईशादि नौ उपनिषद् | हरिकृष्णदास गोयंदका | 2021 | गीताप्रेस गोरखपुर |
| c | तर्कभाषा | डॉ. गजानन शास्त्री मुसलगांवकर | 2023 | चौखंबा सुरभारती प्रकाशन |
| | तर्कभाषा | डॉ. अर्कनाथ चौधरी | 2024 | जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर |

| | |
|---|---|
| Program Name- B.A. HONS | |
| Status of Course & Credit: MAJOR & 4 CRDIT | |
| Course Number & Title- STM 602, **लौकिक साहित्य: महाकाव्य एवं खण्डकाव्य** | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester] | |
| Total Lectures / Semester: | |
| 1 | **Introduction:**<br>प्रस्तावना<br>आनंद स्वरूप परमात्मा का अंश होने के कारण मनुष्य के समस्त क्रियाकलाप आनन्दानुभूति के लिए ही होते हैं । आनंदाधिगम के लिए उद्भूत अनेक पदार्थ संघातों में महाकाव्य का महत्व सहृदय समाज से अभिन्न नहीं है, उनमें भी संस्कृत महाकाव्य के महत्ता असंदिग्ध  है । यद्पि वेद और पुराण इसी दिशा में अग्रसर है किंतु इनके मार्ग अपेक्षाकृत भिन्न है । वेद प्रभु सम्मित है और पुराण भी सहृदय सम्मित है , इनमें प्रत्येक व्यक्ति की गति भी संभव नहीं है परंतु कांतासम्मित उपदेश देने वाले महाकाव्योंकी प्राप्ति भी सुगम नहीं है । वेद पुराणों की भाँति पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति इन महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों से संभव है । अतैव छात्र इन महाकाव्यों का अध्ययन कर समाज में सुगमता से जीवन यापन के महत्व से भली भांति परिचित हो पाएंगे । |
| 2 | **Objectives:**<br>1. काव्य की श्रेष्ठता<br>2. पात्रों का चित्रण<br>3. तत्कालीन समाज और संस्कृति का प्रतिबिंब<br>4. महाकाव्य की प्राचीन परंपरा<br>5. प्रेम और विरह का वर्णन<br>6. खंडकाव्य की विशेषता और पुरातन परंपरा का ज्ञान |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1. महाकाव्य और साहित्यिक मूल्यों का ज्ञान<br>2. संस्कृति और समाज का आदर्श रूप<br>3. महाकाव्य के आधारभूत तत्वों का ज्ञान<br>4. कर्तव्यपरायणता या कर्तव्यनिष्ठा का ज्ञान<br>5. साधारण विषयों का असाधारण चित्रण |

| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wise-with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | इकाई - I श्रीहर्ष- नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग) श्लोक 1 - 70 | 12 pds | Understanding |
| | इकाई - II श्रीहर्ष- नैषधीयचरितम् ( प्रथम सर्ग) श्लोक 71-145 | (10 pds) | Remembering |
| | इकाई - III 'नैषधीयचरितम्' का संस्कृत साहित्य को योगदान | (10 pds) | Applying |
| | इकाई - IV कालिदास मेघदूत (पूर्व मेघ) | (10 pds) | Understanding |
| | इकाई - V दूतकाव्य परंपरा में मेघदूत का स्थान | (10 pds) | Applying |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | नैषधीयचरितम् | चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी | 2011 | वाणी पब्लिकेशन,दिल्ली |
| | मेघदूत | विजय कुमार निश्छल | 2014 | वाणी पब्लिकेशन,दिल्ली |
| | संस्कृत साहित्य का इतिहास | बलदेव उपाध्याय | | अनीता पब्लिशिंग हाउस, गाजियाबाद |
| | संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास | रामजी लाल उपाध्याय | 2014 | अनीता पब्लिशिंग हाउस, गाजियाबाद |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Program Name- B.A. SANSKRIT | | | |
| Status of Course & Credit: 6th SEMESTER (4 CREDITS) | | | |
| Course Number & Title: STM 603, **साहित्य शास्त्र** | | | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK | | | |
| Total Lectures / Semester:52 | | | |
| 1 | **Introduction:**<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम निबन्ध, व्याकरण एवं रचना संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं का परस्पर समन्वय है। जिससे विद्यार्थी को साहित्य तथा व्याकरण का मिश्रित आस्वाद प्राप्त होगा। | | |
| 2 | **Objectives: (At least 5)**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य की उपयोगिता तथा महाकाव्य के स्वरुप से परिचित कराना है।<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की गद्यकाव्य के विभिन्न भेदों से परिचय कराना है।<br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य की परिभाषा तथा काव्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराना है।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य के अन्तर्गत विद्यमान शब्द, रस, ध्वनि, गुण, दोष, काव्य के प्रकार इत्यादि का परिचय कराना है।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को साहित्य की अनवरत विकास परम्परा का परिचय प्रदान करना है। | | |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र रचनात्मक लेखन में निपुण हो सकेगें।<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में शोध और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।<br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में संस्कृत काव्यशास्त्र की रस, ध्वनि, शैलियों के प्रति समझ विकसित होगी।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र साहित्यिक आलोचना करने में समर्थ हो सकेंगे।<br>5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक समझ विकसित होगी। | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | Period Number of | Bloom's Taxonomy |

| | | | | Lecture(s) | Learning outcome |
|---|---|---|---|---|---|
| | Unit - I काव्यादर्श (प्रथम अध्याय) | | | 10 | Understanding |
| | Unit - II काव्यादर्श (प्रथम अध्याय) | | | 10 | Understanding |
| | Unit - III साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद) | | | 11 | Understanding |
| | Unit - IV साहित्यदर्पण (द्वितीय परिच्छेद) | | | 11 | Understanding |
| | Unit - V साहित्यशास्त्र का इतिहास आधुनिक काल तक | | | 10 | Analyzing |
| 5 | TEXTBOOKS<br>8. काव्यादर्श | AUTHOR(s)<br>धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता | Edition, Year, Publisher<br>2006 | PLACE<br>मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन, दिल्ली | |
| | 9. साहित्यदर्पण | आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी | 2013 | चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी | |
| | 10. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास | पी.वी. काणे, डॉ इन्द्रचन्द्र शास्त्री | 2018 | मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन वाराणसी | |
| | 11. आधुनिक संस्कृत काव्यपरम्परा | श्री केशवमुसलगांवकर | 2004 | चौखम्भा विद्या भवन वाराणसी | |

Program Name- B.A. SANSKRIT

Status of Course & Credit: 7th SEMESTER (4 CREDITS)

Course Number & Title: STM 604, पालि एवं प्राकृत

Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK

Total Lectures / Semester:52

1 **Introduction:**

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं में, ईसा से प्रथम शताब्दी पूर्व क्रमशः तीन प्रकार की भाषाओं पालि , साहित्यिक प्राकृत एवं अपभ्रंश का आगमन हुआ जो संस्कृत पर आधारित किंतु संस्कृत से भिन्न थीं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में स्त्री पात्रों द्वारा विविध प्रकार की प्राकृतों के प्रयोग का वर्णन किया है। मृच्छकटिक म् में 7 प्रकार की प्राकृत और अपभ्रंश का, हॉल की गाथासप्तशती,प्रवरसेन के सेतुबंध,वाक्पतिराज के गौड़वहो, जैन और बौद्ध आगम ग्रन्थों में प्राकृत के प्रयोग प्राकृत भाषा के महत्त्व को सिद्ध करते हैं। प्रमुख पंच प्राकृतों का व व्याकरण वररुचि , पुरुषोत्तम एवं मार्कण्डेय मुनि द्वारा भी सुचारु रूप से लिखा गया। भारतीय संस्कृति की आत्मा के पूर्ण दर्शन के लिए पालि और प्राकृत भाषा को जानना विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है । इस दृष्टि से मुख्य रूप से 'धम्मपद ' के वग्गों और ' गाथासप्तशती ' की 50 गाथाओं को पाठ्यक्रम में रखकर पालि और प्राकृत सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा।

2 **Objectives:**

1. 1. भारतीय आर्य भाषाओं में पालि एवं प्राकृत की स्थिति, प्रादुर्भाव एवं विकास का ज्ञान देना।
2. पाली पिटकर साहित्य एवं सुत्तपिटक में आने वाले धम्मपद का ज्ञान देना।
3. वैदिक भाषा से पाली और प्राकृत भाषा में हुए परिवर्तनों से परिचित कराना।
4. पालि और प्राकृत में समानता एवं असमानता से परिचित करेंगे।
5. धम्मपद और गाथासप्तशति के चयनित अंशों का अध्यापन कर उनकी विषय वस्तु का परिचय कराना।
6. अध्यापन द्वारा पालि शब्दों के संस्कृत रूप बताकर पालि में परिवर्तन के प्रमुख नियमों की जानकारी देना।
7. प्राकृत भाषा के महत्त्व और विश्व की विविध भाषाओं से उसका संबंध बताना।

3

**1**. छात्रों को भारतीय आर्यभाषाओं में पालि एवं प्राकृत की स्थिति एवं प्रादुर्भाव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त होगा।

2. पालि साहित्य में धम्मपद की स्थिति एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होगा।

3. वैदिक भाषा से पालि और प्राकृत भाषा में हुए प्रमुख परिवर्तनों की जानकारी होगी।

4. पालि और प्राकृत भाषा में समानता और असमानता का ज्ञान प्राप्त होगा।

5. पाठ्यक्रम में चयनित अंशों के अध्ययन से छात्रों को उनकी विषयवस्तु का ज्ञान होगा।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 6. प्रायोगिक रूप द्वारा पालि और प्राकृत रूप में परिवर्तन करने के कुछ प्रमुख नियमों को जानेंगे।<br>7. छात्र प्राकृत भाषा के महत्त्व और विश्व की विविध भाषाओं से उन भाषाओं का संबंध जानेंगे। | | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning Outcome |
| | यूनिट 1: धम्मपद (यमकवग्गो- अरहन्तवग्गो) | | | 10 | Understanding |
| | यूनिट 2: धम्मपद (सहस्सवग्गो- बुद्धवग्गोतक) | | | 10 | Understanding |
| | यूनिट 3: अशोक के अभिलेख डा. राजबली पाण्डेय (1) सारनाथ स्तम्भाभिलेख (पृष्ठ स. १८५) (1) कालसी शिलालेख (पृष्ठ स. 22,21,एवं 31) | | | 10 | Understanding |
| | यूनिट 4: गाहासत्तसई प्रथम शतक १-५० गाथाएँ | | | 10 | Understanding and applying |
| | यूनिट 5: पालि एवं प्राकृत भाषा साहित्य का इतिहास | | | 12 | Understanding and applying |
| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, Publisher | PLACE | |
| | पाली भाषा और साहित्य | डॉ. इंद्र चंद्र शास्त्री | 2017 | हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निर्देशालय दिल्ली विश्वविद्यालय | |
| | पालि साहित्य का इतिहास | भरतसिंह उपाध्याय | 2013 | हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग | |
| | पालि साहित्य का इतिहास | भिक्षु धर्मरक्षित | 2018 | सिद्धार्थ बुक्स, दिल्ली | |
| | पालि साहित्य का इतिहास | राहुल सांकृत्यायन | 2020 | सम्यक साहित्य पब्लिकेशंस | |

<table>
<tr><td colspan="4">Program Name- B.A.6th & M.A.1st SEMESTER, SANSKRIT</td></tr>
<tr><td colspan="4">Credit 4</td></tr>
<tr><td colspan="4">Course Number & Title: STM701/711, अनुसंधान क्रिया विधि RESEARCH METHODOLOGY</td></tr>
<tr><td colspan="4">Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK</td></tr>
<tr><td colspan="4">Total Lectures / Semester:52</td></tr>
<tr><td>1</td><td colspan="3">Introduction:<br>साहित्यिक शोध में शोधार्थी शोध की समस्या का चयन समस्या को डिजाइन करना, समस्या के उद्देश्य एवं अवधारणा विकसित करना, समस्या से संबंधित डाटा का संग्रह करना शोध की परिकल्पना तैयार करना तथा इन सब का विश्लेषण करते हुए तथ्यों के साथ सत्य का अनुसंधान करना vkfn प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए भाषाविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है ।</td></tr>
<tr><td>2</td><td colspan="3">Objectives: (At least 5)<br>8. अज्ञात ज्ञान के विषय में परिकल्पना कर उसका विश्लेषण करते हुए उसे ज्ञात विषय बनाने की प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे ।<br>9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की रचनात्मकता तथा अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना है।<br>10. साहित्य में सही शोध के मानक क्या हो सकते हैं इसका परिचय प्रस्तुत करना।<br>11. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्य और संस्कृति के तुलनात्मक शोध की क्षमता विकसित करना है।<br>12. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के लिए भविष्य के अध्ययन को निर्देशित करने में मदद करना है।</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="3">Course Outcomes (CO1: (At least 5)<br>12. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र संस्कृत में शोध करने और विष्लेषण करने में समर्थ हो सकेंगे।<br>13. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त शोधार्थी साहित्यिक में वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक और तार्किक शोध की क्षमता विकसित कर सकेंगे।<br>14. वर्णनात्मक शोध, सहसंबंधी शोध, प्रायोगिक शोध, निदानात्मक शोध, मात्रात्मक अनुसंधान, गुणात्मक अनुसंधान, विश्लेषणात्मक अनुसंधान, अनुप्रयुक्त अनुसंधान, आधारभूत अनुसंधान तथा अवधारणात्मक अनुसंधान के विषय में समझ विकसित करने सक्षम हो सकेंगे।<br>15. गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध के विषय में समझ सकेंगे।<br>16. संबंधित विषय में कौशल व दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>4</td><td>Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit)</td><td>Period Number of Lecture(s)</td><td>Bloom's Taxonomy Learning Outcome</td></tr>
<tr><td></td><td>Unit - I अनुसंधान और इसके नैतिक आयाम</td><td>11</td><td>Understanding</td></tr>
<tr><td></td><td>•</td><td></td><td></td></tr>
<tr><td></td><td>Unit - II अनुसंधान की प्रक्रिया</td><td>10</td><td>Understanding</td></tr>
<tr><td></td><td>•</td><td></td><td></td></tr>
</table>

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | **Unit - III** डेटा संग्रह/ सामग्री और अनुसंधान के उपकरण | | | 11 | **Understanding** |
| | • | | | | |
| | **Unit - IV** डेटा विश्लेषण/अनुसंधान के तरीके | | | 10 | **Understanding and applying** |
| | • | | | | |
| | **Unit - V** अनुसंधान की प्रस्तुति | | | 10 | **Understanding and applying** |
| | • | | | | |
| **5** | **TEXTBOOKS**<br>**1.** अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया | **AUTHOR(s)**<br>डा. राजेन्द्र मिश्रः | **Edition, Year, Publisher**<br>2012 | **PLACE**<br>तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली | |
| | **2.** शोध प्रविधि, | विनय मोहन शर्मा | **2023** | नेशनल पेपरबैक, न्यू दिल्ली | |
| | **3.** शोध (स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्यविधि) | बैजनाथ सिंहल | 2023 | वाणी प्रकाशन, दिल्ली | |
| | **4.** संस्कृत शिक्षण सरणी | आचार्य राम शास्त्री | 2023 | परिमल पब्लिकेशन,दिल्ली | |
| | **5.** शोध पद्धतियां | डॉक्टर बी. एल. फाड़िया , | **2019** | साहित्य भवन पब्लिकेशंस,आगरा | |

| | |
|---|---|
| | **Program Name- B.A.6th & M.A.1st SEMESTER, SANSKRIT** |
| | Credit 4 |
| | Course Number & Title, STM 702/712 भारतीय संस्कृति |
| | Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: L-52 |
| | Total Lectures 52 / Semester: First |
| 1 | **Introduction:**<br>विश्व का प्राचीनतम साहित्य संस्कृत साहित्य है, यह सर्वमान्य सिद्धांत है। भारतीय सामाजिक जीवन का चरम लक्ष्य सदा ही शाश्वत आनन्दोपलब्धि रहा है। यह प्राचीन संस्कृत साहित्य के अनुशीलन से ही सम्भव है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में संरक्षित ज्ञान को छात्र भारतीय संस्कृति नामक इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से भली भांति जान पायेगा। |
| 2 | **Objectives:**<br>1: प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान<br>2: विभिन्न संस्कृतियों के समन्वय से व्यापक दृष्टिकोण का विकास<br>3: सामाजिक मूल्यों का विकास<br>4: आध्यात्मिक उन्नति<br>5: प्राचीन संस्कृत विधाओं का ज्ञान<br>6: सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण |
| 3 | **Course Outcomes:**<br>1. प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में संरक्षित संस्कृति की समझ<br>2. अन्य संस्कृतियों में समन्वय के ज्ञान से सांस्कृतिक विचारों में समृद्धि का ज्ञानार्जन<br>3. धार्मिक विविधताओं का ज्ञान<br>4. मानव जीवन में सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता का महत्व का ज्ञान प्राप्त कर पायेगा<br>5. प्राचीन संस्कृत विधाओं का ज्ञान प्राप्त कर पायेगा<br>6. सांस्कृतिक धरोहर के महत्व को समझ नवीन शोध दृष्टि प्राप्त कर पायेगा |

| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wise-with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | Unit - I अ) भारतीय संस्कृति प्रागैतिहासिक वैदिक<br>(ब) भारतीय संस्कृति में अन्य संस्कृतियों का समन्वय एवं विश्व संस्कृति में भारतीय संस्कृति का योगदान | 10 Pds | Understanding |
| | Unit - II पुरुषार्थ चतुष्ट्य, षोडश संस्कार, वर्णाश्रमधर्म | 10 Pds | Understanding |
| | Unit -III शैव, वैष्णव, शाक्त धर्म, तन्त्रशास्त्र, श्रमण संस्कृति | 10 Pds | Analyzing |
| | Unit - IV संस्कृत में वैज्ञानिक साहित्य- ज्योतिष, आयुर्वेद एवं गणित शास्त्र | 11 Pds | Remembering |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | Unit - V भारत की प्राचीन लिपियाँ | 11 Pds | Evaluating |

| 5 | TEXTBOOKS | AUTHOUR | Edition, Year, Publisher | PLACE |
|---|---|---|---|---|
| | भारतीय संस्कृति सौरभम् | रामजी उपाध्याय | 2005 | शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी |
| | भारतीय संस्कृति | दीपक कुमार | 2018 | चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी |
| | भारतीय संस्कृति | डॉ0 देवराज | | उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ |
| | भारतीय-संस्कृतिः | आचार्य लोकमणी दाहाल | | चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी |

| | |
|---|---|
| **Program Name- B.A.6th & M.A.1st SEMESTER, SANSKRIT** | |
| Status of Course & Credit: Major Course/ Credit 4 | |
| Course Number & Title, STM 703/713 काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: L-5,T-0,P/S-0 | |
| Total Lectures / Semester: 52 | |

**Introduction:**

काव्यशास्त्र तथा सौन्दर्यशास्त्र का सह सम्बन्ध स्थापित करना ।

**Course Objectives:**

1:काव्य के स्वरूप, हेतु, प्रयोजन एवं काव्य के विविध रूपों का ज्ञान कराना

2:गुण एवं अलंकार के स्वरूपगत भेद की पहचान कराना तथा त्रिगुणवाद की व्यञ्जकता के प्रयोग को सिखाना

3:दृश्य काव्य के भेदक तत्त्व वस्तु नेता रसादि के ज्ञान के साथ नाट्य वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों के उपयोग को समझाना

4:पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र की आरंभिक स्थिति के ज्ञान के साथ प्लेटो, अरस्तू आदि की सौन्दर्य अवधारणा का ज्ञान कराना

5: पाश्चात्य एवं भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन कराना

**Course Outcomes:**

After completion of the course, students will be able to:

(1) विविध श्रेणियों के काव्यों के मूल्यांकन की क्षमता उत्पन्न होगी ।

(2) काव्य में ओज, माधुर्य एवं प्रसाद गुणों के क्रियात्मक रूप से प्रयोग की क्षमता उत्पन्न होगी।

(3) कथावस्तु, नायक तथा रसादि के ज्ञान के साथ वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों का प्रयोग करने में समर्थ होंगे।

(4) पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्रियों के सौन्दर्य मानकों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी प्रयोग कर सकते हैं.

(5) पाश्चात्य एवं भारतीय सौंदर्यशास्त्र के तुलनात्मक अध्ययन के साथ वैश्विक स्तर पर सौंदर्य चेतना को जागृत करने का प्रयास कर सकते हैं।

(6) सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि से काव्यकला का अन्य ललित कलाओं से अन्तः सम्बन्ध स्थापित कर नवसृजन कर सकते हैं।

| Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|
| Unit - I मम्मट, काव्यप्रकाश- प्रथम उल्लास | 10 | 1 |
| Unit - II मम्मट, काव्य प्रकाश- अष्टम उल्लास | 11 | 3 |
| Unit - III दशरूपक प्रथम प्रकाश (संध्यंगो को छोड़कर एवं वृत्ति एवं प्रवृत्ति | 11 | 3 |
| Unit - IV पाश्चात्य सौन्दर्य शास्त्र-प्लेटो, अरस्तू | 10 | 6 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | Unit - V पाश्चात्य एवं भारतीय सौन्दर्य शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन | | 10 | 4 |
| | TEXTBOOKS | AUTHOR | Edition, Year, Publisher | PLACE |
| | 1.काव्य प्रकाश | आचार्य मम्मट | 2023 | चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन संस्करण वाराणसी |
| | 2.दशरूपक | आचार्य धनन्जय | 2020 | डा. श्रीनिवास शास्त्री - साहित्यभण्डार मेरठ |
| | 3. काव्य प्रकाश | आचार्य मम्मट | 2014 | चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन |
| | 4. दशरूपक | आचार्य धनन्जय | 2022 | साहित्यभण्डार मेरठ वर्ष मेरठ |

| | |
|---|---|
| **Program Name- B.A.6th & M.A.1st SANSKRIT** | |
| Status of Course & Credit: Major Course/ Credit 4 | |
| Course Number & Title: STM 704/714, निबन्ध, व्याकरण एवं रचना | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 PER WEEK | |
| Total Lectures / Semester:52 | |
| 1 | **Introduction:**<br>• प्रस्तुत पाठ्यक्रम निबन्ध, व्याकरण एवं रचना संस्कृत साहित्य की विभिन्न विधाओं का परस्पर समन्वय है। जिससे विद्यार्थी को साहित्य तथा व्याकरण का मिश्रित आस्वाद प्राप्त होगा। |
| 2 | **Objectives: (At least 5)**<br>1: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को निबन्धों के माध्यम से संस्कृत भाषा की व्याकरणिक संरचना, शब्दावली और विभिन्न शैलीय तत्वों की गहन समझ विकसित करना है।<br>2: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों की रचनात्मकता तथा अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना है।<br>3: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत भाषा के लेखन में व्याकरणिक नियमों के साथ अभ्यास करा कर पारंगत करना है।<br>4: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत वाक्य निर्माण के नियमों का बोध करा कर शुद्ध और अर्थपूर्ण संस्कृत वाक्य निर्माण में कुशल बनाना है।<br>5: प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को पाणिनीय सूत्रों के प्रयोग, लकार तथा धातु रुप के लकारों के प्रयोग में सक्षम बनाना है। जो उन्हें पाणिनीय व्याकरण का अनुसरण करने में सक्षम बनाएगा। |
| 3 | **Course Outcomes**<br>1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्रों में वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, तार्किक और साहित्यिक आलोचनात्मक क्षमता विकसित होगी।<br>2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र संस्कृत में शोध करने और विष्लेषण करने में समर्थ हो सकेंगे।<br>3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र संस्कृत भाषा में लेखन कार्य करने में तथा संस्कृत ग्रन्थों को पढने में समर्थ हो सकेंगे।<br>4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र पाणिनीय व्याकरण के अनेक महत्वपूर्ण विभक्तियों सहित सूत्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरान्त छात्र प्रासंगिक सूत्रों की व्याख्या, सूत्रों के कार्य तथा रुपों को पहचान तथा उनके प्रयोग में सक्षम हो सकेंगे। | | | | |
| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wisewith title of unit) | | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit – I संस्कृत निबन्ध (साहित्यिक तथा प्रासंगिक विषयों पर) | | | 10 | Understanding |
| | • | | | | |
| | Unit – II रचना धर्मिता लघुकथा, कविता, व्यंग्य आदि। | | | 10 | Understanding and applying |
| | • | | | | |
| | Unit – III अनुवाद हिन्दी से संस्कृत, संस्कृत में संक्षिप्तीकरण एवं विशदीकरण। | | | 10 | Applying |
| | • | | | | |
| | Unit – IV व्याकरण कारक प्रकरण (सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर) | | | 10 | Understanding and applying |
| | • | | | | |
| | Unit – V भू धातु रुप सिद्धि (दस लकारों में) | | | 12 | Understanding and applying |
| | • | | | | |
| 5 | TEXTBOOKS<br>17. संस्कृतनिबन्धशतकम् | AUTHOR(s)<br>डॉ कपिल देव द्विवेदी | Edition, Year, Publisher<br>2021 | PLACE<br>विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी | |
| | 18. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी | डॉ कपिल देव द्विवेदी | 2024 | विश्वविद्यालय प्रकाशन गोरखपुर | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |
| | 19. सिद्धांतकौमुदी | वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पाणिशंकर | 2010 | चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली |
| | 20. संस्कृत शिक्षण सरणी | आचार्य राम शास्त्री | 2023 | परिमल पब्लिकेशन,दिल्ली |

**Course Number: STM705 Course Title:** परिसंवाद एवं संगोष्ठी **(PARISAMVAD EVAM SANGOSHTHI)**
Credits: 4

**Course Number: STM706/716, Course Title:** शोध परिकल्पना **(SYNOPSIS)/स्वाध्ययन** (SELF STUDY)

**Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT**

**Course Number: STM801/811, Course Title:** ध्वनि सिद्धांत
Credits: 5
इकाई 1- काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक दृष्टि से अध्ययन
इकाई 2- ध्वन्यालोक- प्रथम उद्योत (1 से 10 कारिका पर्यंत)
इकाई 3- ध्वन्यालोक- प्रथम उद्योत (11 से 19 कारिका पर्यंत)
इकाई 4- वक्रोक्तिजीवितम् प्रथम उन्मेष (1 से 29 श्लोक पर्यंत)
इकाई 5- वक्रोक्तिजीवितम् प्रथम उन्मेष (30 से 58 श्लोक पर्यंत)

**lanHkZ xzUFk**:


1. बलदेव उपाध्याय- भारतीय साहित्यशास्त्र (द्वितीय भाग)
2. ए. संकरन् -रस सिद्धांत
3. डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी- भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा एवं विश्व रंगमंच, प्रतिभा प्रकाशन नई दिल्ली
4. सीताराम चतुर्वेदी- भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ।
5. डॉ नगेन्द्र - रस सिद्धांत
6. डॉ चंडिका प्रसाद शुक्ल- ध्वन्यालोक

| | |
|---|---|
| **Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT** | |
| Status of Course & Credit: Major Course (4 Credits) | |
| Course Number & Title: STM 802/ 812 धर्मशास्त्र | |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week | |
| Total Lectures / Semester: 52/ semester | |
| | **प्रस्तावना:**<br>**अपने आप को प्रबुद्ध एवं वर्तमान के प्रति जागरूक मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने अतीत का ज्ञान रखना आवश्यक है; क्योंकि जैसे वर्तमान, भविष्य का आधार होता है, उसी प्रकार भूत या अतीत भी वर्तमान का आधार होता है। अतः जो व्यक्ति अपने देश के इतिहास या बौद्धिक आध्यात्मिक परम्परा के विषय में थोड़ा भी नहीं जानता, उसे सभ्य एवं आदर्श नागरिक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। जहाँ तक भारतीय इतिहास की बात है, भारतीय सभ्यता का ऐतिहासिक क्षेत्र बहुत व्यापक होने से प्रत्येक व्यक्ति के लिए इसका सर्वांगीण ज्ञान आवश्यक या सम्भव नहीं है, फिर भी कुछ ऐसे सामान्य विषय या तथ्य है, जिनके बारे में प्रत्येक भारतीय को कुछ न कुछ जानना आवश्यक है। इसके अंतर्गत प्रस्तुत पाठ्यक्रम में धर्मशास्त्र मनुस्मृति , याज्ञवल्क्य स्मृति , शुक्र नीति एवं अर्थशास्त्र का अध्ययन कराया जाएगा ।** |
| | **Objectives: (At least 5)**<br>**उद्देश्य :**<br>**1. आध्यात्मिक उन्नति**<br>**2. नैतिक और सामाजिक मार्गदर्शन**<br>**3. परंपराओं और संस्कृति का संरक्षण**<br>**4. मानसिक और भावनात्मक शांति**<br>**5. कर्म और धर्म का संतुलन**<br>**इस प्रकार, धर्मशास्त्रों का अध्ययन जीवन को सही दिशा देने, आध्यात्मिक उन्नति पाने और समाज में उचित स्थान बनाने के उद्देश्य से किया जाता है।** |
| | **Course Outcomes (CO1: (At least 5)**<br>**परिणाम**<br>**धर्मशास्त्र पढ़ने के कई सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, जो व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं। कुछ मुख्य परिणाम निम्नलिखित हैं:**<br><br>**1. आध्यात्मिक जागरूकता और उन्नति**<br>**2. नैतिकता और चरित्र का विकास**<br>**3. मानसिक शांति और संतुलन**<br>**4. समाज और परिवार के प्रति उत्तरदायित्व**<br>**5. धार्मिक और सांस्कृतिक समझ का विकास**<br>**6. धैर्य और सहनशीलता**<br>**7. समग्र व्यक्तित्व विकास** |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | **8. आध्यात्मिक मार्गदर्शन में विश्वास**<br><br>**इन परिणामों से व्यक्ति का व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन समृद्ध होता है, और वह एक शांतिपूर्ण, संतुलित और सुखी जीवन जीने में सक्षम होता है।** | | | |
| | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit – I | | | |
| | मनुस्मृति का प्रतिपादय्<br>• इकाई 1: मनुस्मृतिः द्वितीय अध्याय 1-50 श्लोक तथा सप्तम अध्याय 1-50 श्लोक<br>• स्मृति शब्द का अर्थ एवं उद्देश्य<br>प्रमुख स्मृतियाँ एवं उनका प्रतिपादय् | | 12 pds | Understanding |
| | Unit – II | | | |
| | इकाई 2: याज्ञवल्क्य स्मृतिः (दायभाग प्रकरण)<br>याज्ञवल्क्य स्मृति का प्रतिपादय्<br>• दायभाग प्रकरण व्याख्या | | (10 pds) | Understanding |
| | Unit – III | | | |
| | इकाई 3: कौटिल्य अर्थशास्त्रम् (प्रथम अधिकरण-एक से सप्तम अध्याय तक)<br>अर्थशास्त्र की पृष्ठभूमि<br>कौटिल्य और अर्थशास्त्र<br>कौटिल्य अर्थशास्त्र के स्रोत<br>अर्थशास्त्र का प्रतिपादय् विषय | | (10 pds) | Creating |
| | Unit – IV | | | |
| | इकाई 4: शुक्रनीति- चतुर्थ अध्याय (प्रथम प्रकरण) | | (10 pds) | Analyzing |
| | Unit – V | | | |
| | इकाई 5: पठित पुस्तकों पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न | | (10 pds) | Applying |
| | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition, Year, | Place |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | Publisher | |
| | मनुस्मृति | डॉ सुरेन्द्र कुमार | 2023, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट | नई दिल्ली |
| | याज्ञवल्क्य स्मृति | पं० थानेशचन्द्र उप्रैती | 2020, परिमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड | नई दिल्ली |
| | शुक्रनीतिः | डॉ जशदीशचन्द्र मिश्र | 2022, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन | वाराणसी |
| | कौटीलियम् अर्थशास्त्रम् | डॉ. मिथिलेश पाण्डेय | 2023, महालक्ष्मी प्रकाशन | आगरा |

**Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT**

Status of Course & Credit: Semester Major Course (CREDITS: 5)

Course Number & Title: STM 803/813 चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन

Lectures/ Week: of 55 m. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week

Total Lectures / Semester: 52/ semester

**Introduction:** चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन तीन अलग-अलग दर्शनिक परंपराएं हैं जो प्राचीन भारत में विकसित हुईं। चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी और नास्तिक दर्शन है। इसे लोकायत या बार्हस्पत्य दर्शन भी कहा जाता है।चार्वाक दर्शन के अनुसार, जीवन का उद्देश्य सुख और आनंद है। इस दर्शन में आत्मा, परमात्मा और पुनर्जन्म की अवधारणा को नकारा जाता है। भौतिकवाद, नास्तिकता, सुखवाद चार्वाक दर्शन के प्रमुख सिद्धांत हैं।

बौद्ध धर्म के चार मुख्य सिद्धांत जो जीवन की वास्तविकता को दर्शाते हैं - दुख की सत्ता, दुख का कारण, दुख का निवारण, और दुख से मुक्ति का मार्ग। अष्टांगिक मार्ग बौद्ध धर्म के आठ मुख्य सिद्धांत जो जीवन को सही दिशा में ले जाते हैं-समझ, वचन, कर्म, जीवन, प्रयास, स्मृति, एकाग्रता, और समाधि। बौद्ध धर्म में आत्म-साक्षात्कार को बहुत महत्व दिया जाता है, जिससे व्यक्ति अपने असली स्वरूप को समझ सकता है। बौद्ध धर्म में कर्म के सिद्धांत को माना जाता है, जिसके अनुसार व्यक्ति के कर्मों का परिणाम उसके भविष्य को निर्धारित करता है।

आर्हत दर्शन एक दर्शनिक परंपरा है। इसे जिन दर्शन भी कहा जाता है। आर्हत दर्शन के अनुसार, जीवन का उद्देश्य आत्मा की मुक्ति है। इस दर्शन में आत्मा, कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार किया जाता है। अहिंसा, आत्मा की मुक्ति, कर्म सिद्धांत आर्हत दर्शन के प्रमुख सिद्धांत हैं

इन तीनों दर्शनों में से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और सिद्धांत हैं, लेकिन वे सभी जीवन के उद्देश्य और मानवता की स्थिति को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**Objectives:**

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को चार्वाक दर्शन की गहन जानकारी देना है।चार्वाक दर्शन सुख और आनंद प्राप्ति को मानव जीवन का उद्देश्य मानता है। चार्वाक दर्शन तक और विचारों की प्रमाणिकता को महत्व देता है चार्वाक दर्शन जीवन की महत्वता को समझने में सहायक होता है इससे छात्र अपने जीवन को अधिक सार्थक और सुखी बना सकता है ।
2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विचारों की स्वतंत्रता की प्रेरणा देना है चार्वाक दर्शन का उद्देश्य छात्रों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों की महत्वता सिखाता है जिससे वे अपना जीवन संतुलित रूप से व्यतीत कर सकते हैं ।
3. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को बौद्ध दर्शन तथा उसके सिद्धांतों यथा चार सत्य , अष्टांगिक मार्ग इत्यादि का गहन ज्ञान कराना है ।
4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के जीवन में मानसिक शांति एवं स्थिति का लाना है इसके अध्ययन से छात्रों में सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण विकसित होगा।
5. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रोंको आर्हत दर्शन तथा उसके सिद्धांतों यथा त्रिरत्न , पंच महाव्रत , सप्तभंगीनय , क्षणिकवाद , जीव तथा स्थावर वर्गीकरण इत्यादि का गहन ज्ञान कराना है ।

**Course Outcomes:**

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं अधिकारों की समझ विकसित होगी तथा उनके स्व - मूल्यांकन में सुधार होगा
2. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अधीन के उपरांत छात्रों में नैतिक मूल्यों की समझ विकसित होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व के प्रति तार्किक रूप से विचार करने की क्षमता का विकास होगा
3. पाठ्यक्रम के अध्ययन की उपरांत छात्रों में मानसिक तनाव एवं अवसाद में कमी आएगी तथा उनके आत्मज्ञान एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होगी ।

| | |
|---|---|
| | 4. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्र में दया एवं करुणा की भावना विकसित होगी तथा जीवन के उद्देश्य एवं अर्थ को समझने की समझ विकसित होगी ।<br>5. पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण का विकास होगा तथा नैतिक मूल्यों की समझ विकसित हो सकेगी। |

| | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|
| | Unit – I | | |
| | चार्वाक दर्शन (सर्वदर्शनसंग्रह से) | (11 pds) | Understanding |
| | Unit – II | | |
| | बौद्ध दर्शन - सर्वदर्शन संग्रह से व्याख्येय अंश - पृ० सं० 26 से 55 तक (प्रारंभ से क्षणिकवाद की स्थापना पर्यंत) | (11 pds) | Understanding |
| | Unit – III | | |
| | बौद्ध दर्शन पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न | (10 pds) | Understanding & Applying |
| | Unit – IV | | |
| | आर्हत दर्शन -सर्वदर्शन संग्रह से व्याख्येय अंश पृ० सं०143 से 169 तक (जैयवत्त मीमांसा से मोक्ष विचार पर्यंत ) | (10 pds) | Understanding |
| | Unit – V | | |
| | आर्हत दर्शन पर आधारित समालोचनात्मक प्रश्न | (10 pds) | Understanding & Applying |

| | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Edition Year | Publisher |
|---|---|---|---|---|
| | | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | भारतीय दर्शन को रूपरेखा | प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा | 2020 | मोतीलाल बनारसीदास |
| | चार्वाक दर्शन | आचार्य आनंद झा | 2022 | उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ |
| | भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन | चन्द्रधर शर्मा | 2022 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा | डॉ सर्वानंद पाठक | 2020 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |
| | भारतीयदर्शन | आचार्य बलदेव उपाध्याय | 2023 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | बौद्ध दर्शन मीमांसा | आचार्य बलदेव उपाध्याय | 2023 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | बौद्धएवं जैनदर्शनके विविध आयाम | निरंजन श्वेतकेतुबोरा | 2020 | निरंजनबोरा |
| | जैन धर्म का इतिहास | असीम कुमार राय | 2022 | नवोदय प्रकाशन जयपुर |
| | जैन धर्म | डॉ अनिल कुमार जैन | 2023 | इंफिनिटी एजुकेशन |

**Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT**

Credits: 10 **Course Number: STM804/814, Course Title:** परिसंवाद एवं संगोष्ठी
Credits: 4

**Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT**
**Course Number: STM 805/815, Course Title:** लघु शोध प्रबन्ध **(DISSERTATION)** (With research)

Credits: 10

| |
|---|
| Program Name- B.A. 4th year & MA 2nd Sem. |
| Status of Course & Credit: Semester Major Course (CREDITS: 5) |
| Course Number & Title: STM 806/816 चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन |
| Lectures/ Week: of 55 m. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week |
| Total Lectures / Semester: 52/ semester |

**Introduction:** चार्वाक, बौद्ध और आर्हत दर्शन तीन अलग-अलग दर्शनिक परंपराएं हैं जो प्राचीन भारत में विकसित हुईं। चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी और नास्तिक दर्शन है। इसे लोकायत या बार्हस्पत्य दर्शन भी कहा जाता है।चार्वाक दर्शन के अनुसार, जीवन का उद्देश्य सुख और आनंद है। इस दर्शन में आत्मा, परमात्मा और पुनर्जन्म की अवधारणा को नकारा जाता है। भौतिकवाद, नास्तिकता, सुखवाद चार्वाक दर्शन के प्रमुख सिद्धांत हैं।

बौद्ध धर्म के चार मुख्य सिद्धांत जो जीवन की वास्तविकता को दर्शाते हैं - दुख की सत्ता, दुख का कारण, दुख का निवारण, और दुख से मुक्ति का मार्ग। अष्टांगिक मार्ग बौद्ध धर्म के आठ मुख्य सिद्धांत जो जीवन को सही दिशा में ले जाते हैं-समझ, वचन, कर्म, जीवन, प्रयास, स्मृति, एकाग्रता, और समाधि। बौद्ध धर्म में आत्म-साक्षात्कार को बहुत महत्व दिया जाता है, जिससे व्यक्ति अपने असली स्वरूप को समझ सकता है। बौद्ध धर्म में कर्म के सिद्धांत को माना जाता है, जिसके अनुसार व्यक्ति के कर्मों का परिणाम उसके भविष्य को निर्धारित करता है।

आर्हत दर्शन एक दर्शनिक परंपरा है। इसे जिन दर्शन भी कहा जाता है। आर्हत दर्शन के अनुसार, जीवन का उद्देश्य आत्मा की मुक्ति है। इस दर्शन में आत्मा, कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा को स्वीकार किया जाता है। अहिंसा, आत्मा की मुक्ति, कर्म सिद्धांत आर्हत दर्शन के प्रमुख सिद्धांत हैं

इन तीनों दर्शनों में से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और सिद्धांत हैं, लेकिन वे सभी जीवन के उद्देश्य और मानवता की स्थिति को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

**Objectives:**

6. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को चार्वाक दर्शन की गहन जानकारी देना है।चार्वाक दर्शन सुख और आनंद प्राप्ति को मानव जीवन का उद्देश्य मानता है। चार्वाक दर्शन तक और विचारों की प्रमाणिकता को महत्व देता है चार्वाक दर्शन जीवन की महत्वता को समझने में सहायक होता है इससे छात्र अपने जीवन को अधिक सार्थक और सुखी बना सकता है ।
7. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विचारों की स्वतंत्रता की प्रेरणा देना है चार्वाक दर्शन का उद्देश्य छात्रों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अधिकारों की महत्वता सिखाता है जिससे वे अपना जीवन संतुलित रूप से व्यतीत कर सकते हैं ।
8. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को बौद्ध दर्शन तथा उसके सिद्धांतों यथा चार सत्य , अष्टांगिक मार्ग इत्यादि का गहन ज्ञान कराना है ।
9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के जीवन में मानसिक शांति एवं स्थिति का लाना है इसके अध्ययन से छात्रों में सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण विकसित होगा।
10. प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रोंको आर्हत दर्शन तथा उसके सिद्धांतों यथा त्रिरत्न , पंच महाव्रत , सप्तभंगीनय , क्षणिकवाद , जीव तथा स्थावर वर्गीकरण इत्यादि का गहन ज्ञान कराना है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **Course Outcomes:**<br>6. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं अधिकारों की समझ विकसित होगी तथा उनके स्व - मूल्यांकन में सुधार होगा<br>7. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अधीन के उपरांत छात्रों में नैतिक मूल्यों की समझ विकसित होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व के प्रति तार्किक रूप से विचार करने की क्षमता का विकास होगा<br>8. पाठ्यक्रम के अध्ययन की उपरांत छात्रों में मानसिक तनाव एवं अवसाद में कमी आएगी तथा उनके आत्मज्ञान एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होगी ।<br>9. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्र में दया एवं करुणा की भावना विकसित होगी तथा जीवन के उद्देश्य एवं अर्थ को समझने की समझ विकसित होगी ।<br>10. पाठ्यक्रम के अध्ययन के उपरांत छात्रों में सकारात्मक सोच और दृष्टिकोण का विकास होगा तथा नैतिक मूल्यों की समझ विकसित हो सकेगी। | | |
| | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
| | Unit – I | | |
| | चार्वाक दर्शन (सर्वदर्शनसंग्रह से) | (11 pds) | Understanding |
| | Unit – II | | |
| | बौद्ध दर्शन - सर्वदर्शन संग्रह से व्याख्येय अंश - पृ० सं० 26 से 55 तक (प्रारंभ से क्षणिकवाद की स्थापना पर्यंत) | (11 pds) | Understanding |
| | Unit – III | | |
| | बौद्ध दर्शन पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न | (10 pds) | Understanding & Applying |
| | Unit – IV | | |
| | आर्हत दर्शन -सर्वदर्शन संग्रह से व्याख्येय अंश पृ० सं०143 से 169 तक (जैयवत्त मीमांसा से मोक्ष विचार पर्यंत ) | (10 pds) | Understanding |
| | Unit – V | | |
| | आर्हत दर्शन पर आधारित समालोचनात्मक प्रश्न | (10 pds) | Understanding & Applying |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | TEXTBOOKS | AUTHOR(s) | Editi | Publisher |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | on Year | |
| | भारतीय दर्शन को रूपरेखा | प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा | 2020 | मोतीलाल बनारसीदास |
| | चार्वाक दर्शन | आचार्य आनंद झा | 2022 | उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ |
| | भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन | चन्द्रधर शर्मा | 2022 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा | डॉ सर्वानंद पाठक | 2020 | चौखंबा विद्या भवन वाराणसी |
| | भारतीयदर्शन | आचार्य बलदेव उपाध्याय | 2023 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | बौद्ध दर्शन मीमांसा | आचार्य बलदेव उपाध्याय | 2023 | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
| | बौद्धएवं जैनदर्शनके विविध आयाम | निरंजन श्वेतकेतुबोरा | 2020 | निरंजनबोरा |
| | जैन धर्म का इतिहास | असीम कुमार राय | 2022 | नवोदय प्रकाशन जयपुर |
| | जैन धर्म | डॉ अनिल कुमार जैन | 2023 | इंफिनिटी एजुकेशन |

| Program Name- B.A.8th & M.A.2nd SEMESTER, SANSKRIT |
|---|
| Status of Course & Credit: Major Course 8 SEMSTER (4 credits ) |
| Course Number & Title: STM 807/817 सांस्कृतिक एवं पर्यटन तीर्थस्थल |
| Lectures/ Week: of 55 mts. Each. [Week 13 per semester]: 4 per week |
| Total Lectures / Semester: 52/ semester |

1

**Introduction:**

सांस्कृतिक पर्यटन का उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों, परपराओं और स्थानीय जीवन शैली को समझना और अनुभव करना है साथ ही तीर्थ पर्यटन के माध्यम से आध्यात्मिक एवं सात्विक विचारों का विकास मानव जीवन को आनन्दमय और सार्थक बनाता है।

**Objectives:**

1. सांस्कृतिक दृष्टि से पर्यटन के महत्व को समझाना ।
२. पर्यटन स्थलों के भौगोलिक एवं ऐतिहासिक महत्व का ज्ञान कराना।
3. स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं और कलाओं के संरक्षण और संवर्धन के प्रति रुचि एवं जागरूकता के लिए प्रेरित करना।
4- तीर्थाटन की दृष्टि से भारत में स्थित विभिन्न धार्मिक स्थलों का ज्ञान होना ।
5. मनुष्य के आत्मोत्कर्ष तथा व्यक्तिव के विकास में तीर्थाटन की उपयोगिता और उसके महत्व को समझाना।

3

**Course Outcomes:**

१. पर्यटन तथा तीर्थ सम्बन्धी प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान होगा
२. विभिन्न समुदायों के मध्य परस्पर समझ और सहयोग में वृद्धि होगी।
3. सांस्कृतिक आदान प्रदान से नवीन विचारों और नवाचारों के प्रति जिज्ञासा जागेगी।
५. पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेगे।
5. तीर्थ पर्यटन से विद्यार्थियों में अध्यात्म के प्रति रुचि तथा सात्विक गुणों का विकास होगा।
6. प्रकृति के साथ सामञ्जस्य तथा पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ेगी।

| 4 | Course Contents (not as running matter, should be points wise with title of unit) | | Period Number of Lecture(s) | Bloom's Taxonomy Learning outcome |
|---|---|---|---|---|
| | इकाई 1 सांस्कृतिक पर्यटन | | 10 Pds | Understanding |
| | इकाई 2 तीर्थ का अभिप्राय एवं महत्व | | 10 pds | Understanding |
| | इकाई 3 भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल एवं उनके वैशिष्ट्य प्रतिपादित ग्रन्थ | | 11 pds | Analyzing |
| | इकाई 4 प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थल | | 10 pds | Understanding |
| | इकाई 5 जैन, बौद्ध एवं अन्य तीर्थ स्थल | | 11 pds | Understanding |
| 5 | TEXTBOOK | AUTHOR EDITION PUBLISHER | YEAR | PLACE |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | 1. संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक पर्यटन स्थल<br><br>2. पर्यटन विकास एवं प्रभाव | डॉ. जगमोहन नेगी<br><br>डॉ. के एस देवरिया | 2015<br><br>2019 | तक्षशिला प्रकाशन<br><br>भारत पुस्तक भंडार |

**Course Number: STM 951, Course Title: साहित्य समीक्षा (**LITERATURE REVIEW**)**

Class: Pre Ph.D Course Work, Status of Course: MAJOR COURSE, Approved session: 2022-23

Total Credits: 4 Dissertation on given topic.

**Course Number: STM 953, Course Title: (SELF STUDY COURSE)**

Class: Pre PhD Course Work, Status of Course: MAJOR COURSE, Approved session: 2021-22 Total Credits: 4, Periods (55mts. each)/week: 5 (L-5+T-0+P/S-0), Min.pds./sem: 65

**Course No.: STM 954, Course Title: ADV. RESEARCH METHODOLOGY& ANALYSIS (उच्च शोध प्रविधि)** Class: Pre PhD Course Work (Sanskrit & Hindi), Status of Course: MAJOR COURSE, Approved session: 2014-15, Total Credits: 4, Periods (55 mts. each)/week:4(L-4+T-0+P/S-0), Min.pds./sem.:52 **[SAME AS HIM954]**

UNIT 1: RESEARCH & ITS ETHICAL DIMENSIONS (अनुसंधान और उसके आयाम)

Research: Meaning, characteristics and types, Literary Research, Academic Integrity, Fabrication, Plagiarism, Copyright & Intellectual Property Right, Reasoning (Including Mathematical): Number series; letter series; codes; Relationships, Classification.

UNIT 2: PROCESS OF LITERARY RESEARCH (साहित्यिक अनुसंधान की प्रक्रिया)

Review of Literature, Conceptual Framework, Formation of Hypothesis, Selection of Topic, and Plan of work.

Logical Reasoning: Understanding the structure of arguments, Deductive and Inductive reasoning, Verbal analogies: Word analogy–Applied analogy, Verbal classification, Logical Diagrams, Venn diagram, analytical Reasoning.

UNIT 3: DATA COLLECTION/ MATERIALS AND TOOLS OF RESEARCH (तथ्य संग्रह / अनुसंधान की सामग्री एवं उपकरण)

Primary and Secondary sources, Bibliography, Note System, Scientific tools, Printed Sources(books, anthologies, thesauruses, encyclopedias, conference proceedings, unpublished theses, newspaper articles, journals, govt. publications), Literary Terms & Concepts, Research Terminology(synopsis, abstract, review, peer review, refereed publication, catalogue.

Use of ICT(Information and Communication Technology) in Research, General ICT abbreviations and terminology, basics of internet and e-mailing, e-journals, research sites, web search engines, archives, database, blog, etc.).

UNIT 4: DATA ANALYSIS/ METHODS OF RESEARCH (तथ्य विश्लेषण/ शोध पद्धतियां) Sources, acquisition and Interpretation of data, Qualitative and Quantitative data, Graphical representation and mapping of data.

Biographical, Textual, Critical Approaches to Research, Literary Research & Interdisciplinarity

UNIT 5: PRESENTATION OF RESEARCH (अनुसंधान की प्रस्तुति) (a) Mechanics of writing: Spelling, Punctuation, Italics, Names of Persons, Numbers, Titles of works in Research Paper, Quotations, Capitalilization & Personal names in Languages

(b) Writing of a Research Proposal/Synopsis, Abstract, Research Paper, Thesis Writing, Preparing the List of Works, Citing Sources in the Text. Contemporary Issues in Research, Differences between Workshop, Seminar, Conferences, Symposia.

SUGGESTED READINGS (SANSKRIT):

Singhal Baijnath: शोध स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्य विधि
Chandra Suresh: अनुसंधान स्वरूप एवं प्रक्रिया
Sharma VM: शोध प्रविधि
Vidyaniwas Mishra: रीतिविज्ञान
Dr. Rajendra Mishra: अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया
Dr. Paras Nath Rai: अनुसंधान परिचय- लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, हॉस्पीटल रोड, आगरा
Sheltz & Others: RESEARCH METHODS IN SOCIAL RELATIONS
Taylor, Sinha & Ghoshal: RESEARCH METHODOLOGY
Kothari CR: Research Methodology-METHODS AND TECHNIQUES
Karlinger FN: FOUNDATIONS OF BEHAVIOURAL RESEARCH

*****